

वर्ष 2, संयुक्तांक
जुलाई - दिसम्बर 2022

RNI दिल्ली द्वारा सत्यापित शीर्षक कोड - UPHIN49954
सहयोग राशि : ₹ 60.00

आंबेडकरवादी साहित्य

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय के दर्शन
पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका



आंबेडकरवादी गज़लों का स्वरूप



समस्त देशवासियों को
धम्मदीक्षा दिवस
की हार्दिक बधाई
एवं मंगल कामनाएं ।



श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी'

वरिष्ठ साहित्यकार, बरेली (उ.प्र.)
सम्पर्क - 9456045567



डॉ. आर. एम. राव 'मनोहर'

प्रबंधक शिवदुलारी मेमोरियल विश्वेश्वर प्रसाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
अम्बेडकर ग्राम चक इटैली, हथगांव, छागा, फतेहपुर, उ.प्र.
सम्पर्क - 7060240326



डॉ. बी. आर. बुद्धप्रिय

(आंबेडकरवादी साहित्यकार, चिंतक एवं समाजसेवी)
बरेली, उ.प्र.
सम्पर्क - 9412318482



रघुवीर सिंह नाहर

(आंबेडकरवादी कवि)
अलवर, राजस्थान
सम्पर्क - 9413058580



राधेश विकास

डायट प्रवक्ता
हनुमानगंज, देवरिया, प्रयागराज
सम्पर्क - 9956824322



आनन्द कुमार सुमन

(आंबेडकरवादी कवि)
सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.
सम्पर्क - 9838909065

संरक्षक

डॉ० आर०एम० राव 'मनोहर', बरेली
श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी', बरेली
रघुवीर सिंह 'नाहर', राजस्थान

संपादक

देवचंद्र भारती 'प्रखर'

मो.- 9454199538

ambekarvadisahitya@gmail.com

संपादक मंडल

डॉ० मुकुन्द रविदास, धनबाद
डॉ० प्रवेश कुमार, वाराणसी
भूपसिंह भारती, हरियाणा
राधेश विकास, प्रयागराज

संपादकीय कार्यालय

शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी
वाराणसी (उ.प्र.) 221002

स्वामी- देवचंद्र भारती 'प्रखर',
प्रकाशक- देवचंद्र भारती 'प्रखर'
मुद्रक- गौतम प्रिंटर्स
सी.27/111-बी, जगतगंज, वाराणसी
(उ.प्र.)-221002 से मुद्रित एवं
शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी
वाराणसी (उ.प्र.) 221002 से प्रकाशित
संपादक- स्वामी देवचंद्र भारती 'प्रखर'।

आंबेडकरवादी साहित्य

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय
के दर्शन पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-2, संयुक्तांक, जुलाई-दिसम्बर 2022

संपादकीय :

आंबेडकरवादी ग़ज़लों का स्वरूप /03

विचार :

दीपदानोत्सव- एक समरसतावादी प्रपंच /06

आलेख :

ग़ज़ल में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द, उनके शाब्दिक अर्थ व

ग़ज़ल के लिए प्रयुक्त अर्थ वीनस केसरी / 08

जिस दिन आधुनिक ग़ज़ल का जन्म हुआ!

प्रस्तुतकर्ता- एस.डी. शर्मा /11

ग़ज़ल इस्मत् बचाए फिर रही है ... विजेन्द्र शर्मा /13

क्या है ग़ज़ल? नसीम रिफात 'फेवरिट' /18

ग़ज़ल का सिर, पैर और पूँछ रमण कौल /26

ग़ज़ल की बारीकियाँ प्राण शर्मा /29

ग़ज़ल में शब्द ... सतपाल ख्याल /32

आंबेडकरवादी चेतना की ग़ज़लें डॉ. आर. एम. राव 'मनोहर' /36

कविताएँ एवं ग़ज़लें :

अदम गोंडवी, देवचंद्र भारती 'प्रखर', ओमप्रकाश गौतम, श्यामलाल

राही प्रियदर्शी, अरविन्द असर, संजय कुमार सिंह, राम मनोहर राव,

भूपसिंह भारती, राधेश विकास, पुनेश समदर्शी / 39-55

रिपोर्ट :

GOAL के तत्वाधान में ऑनलाइन राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का

आयोजन / 56

GOAL द्वारा 'धम्म प्रहरी सम्मान' वितरण का आयोजन / 58

GOAL का स्थापना दिवस मनाया गया / 60

GOAL के प्रथम अधिवेशन का सफल आयोजन / 61



संपादक के नाम पत्र

**राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले पर आधारित
नाटक का महत्वपूर्ण प्रकाशन।**

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमो बुद्धाय-जय भीम! जय संविधान!

आपके द्वारा संपादित और प्रकाशित 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका का छठवाँ अंक मुझे प्राप्त हुआ। इस अंक को पढ़कर मुझे बहुत ही खुशी हुई। इस अंक में राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले पर आधारित नाटक को प्रकाशित करके आपने एक महत्वपूर्ण काम किया है। आंबेडकरवादी साहित्यकारों के वैश्विक संगठन GOAL के तत्वावधान में बहुजनों को जागरूक करने के लिए एक मंच स्थापित करने की हमारी इच्छा है। उम्मीद है, आपका और आपके संगठन का हमें सहयोग प्राप्त होगा।

-पिंटू गौतम

दरौली, गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

**'आंबेडकरवादी साहित्य', डॉ. आंबेडकर
के मिशन में सहायक।**

माननीय सम्पादक महोदय!

'आंबेडकरवादी साहित्य' का छठवाँ अंक पढ़कर मैंने जो अनुभव किया, उसे एक लघु कविता के रूप में

अभिव्यक्त किया है। आशा है कि आप साहित्य संपादक-मंडल द्वारा इसे पसंद किया जाएगा।

यह जो कर्म राह तेरी है,

जिसका पथिक बन पाये हैं।

निकालकर आंबेडकरवादी साहित्य,

बहुजन मन हरसाये हैं।

यह मिशन है आंबेडकर महान का,

वर्तमान युग के युवा पर विराजमान है।

चुनकर काँटों भरी राह को,

बहुजनों को दिया अनमोल सम्मान है।

-हुबलाल राम अलकाहा

चंद्रपुरा, बोकारो (झारखंड)

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के पाठकों से अपेक्षा की जाती है कि वे पत्रिका एवं प्रकाशित रचनाओं की गुणवत्ता व उपयोगिता के संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया 'संपादक के नाम पत्र' के रूप में ambedkarvadisahitya@gmail.com पर प्रेषित करें। अधिकतम शब्द संख्या 500 तक हो।



आंबेडकरवादी ग़ज़लों का स्वरूप

ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है- स्त्री या प्रेमिका से वार्तालाप (उर्दू हिंदी शब्दकोश, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ) किंतु अयोध्या प्रसाद गोयलीय ने इस विषय में एक अलग तथ्य प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, “ग़ज़ल यूँ तो अरबी भाषा का शब्द है। मगर ईरानियों ने इसे विशेष तौर पर अपनाया है। वहाँ हजार वर्ष से ज्यादा ग़ज़ल का दौर रहा। ‘सुखन अज़ ज़नान गुफ्तन’ या ‘अज़ माशुक़ गुफ्तन’ जिसका सही अर्थ है- औरतों की बात करना या औरतों का जिक्र करना। लेकिन प्रारंभ में किसी लेखक ने ‘अज़’ शब्द के भ्रम में पड़कर ग़ज़ल का अर्थ ‘औरतों से बात करना’ लिख दिया और बाद के लिखने वाले उसी भूल को दोहराते रहे। यदि औरत से बात करना अभीष्ट होता, तो ‘सुखन बा ज़नान’ कहते, न कि ‘अज़ ज़नान’। अतः ग़ज़ल का अर्थ हुआ- औरतों का जिक्र करना, उसके इश्क का दम भरना और उनकी मुहब्बत में मरना (शेर ओ सुखन भाग 2, अयोध्या प्रसाद गोयलीय)। आधुनिक काल में ग़ज़ल के व्यापक विषय-क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए वीनस केसरी ने ग़ज़ल की नई परिभाषा इस प्रकार दी है, ” ग़ज़ल वह पद्य रचना है, जिसमें अरूज़ अनुसार बहर और वज़न का ध्यान रखते हुए रदीफ़ काफ़िया को निभाते हुए कुछ अशआर हों, जो कहन के लिहाज से स्वतंत्र हों वह जिसका भाव पक्ष मानवीय संवेदना और जीवन दर्शन के किसी एक या अनेक पक्षों को इंगितों में प्रकट करता हो। इंगितों से आशय यह है कि नियमों को निभाते हुए जो बात कही जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट न होकर रूपकों, प्रतीकों के एक झीने पर्दे से ढँकी हो” (ग़ज़ल की बाबत, पृष्ठ 23)।

उपर्युक्त अर्थ एवं परिभाषाओं से स्पष्ट है कि-

1. ग़ज़ल शब्द अरबी-फारसी भाषा का शब्द है।
2. प्रारंभ में ग़ज़ल का अर्थ औरत और इश्क़ से संबंधित था।
3. ग़ज़ल एक पद्य रचना है, जो बहर में लिखी जाती है।
4. ग़ज़ल में रदीफ़ और काफ़िया का निर्वहन किया जाता है।
5. ग़ज़ल में रूपकों और प्रतीकों के सहारे विचारों को व्यक्त किया जाता है।

उर्दू ग़ज़ल और हिंदी ग़ज़ल को लेकर आजकल जिरह का माहौल है। ‘हिंदी ग़ज़ल की रिवायत : एक जिरह’ नामक अपने आलेख में सुल्तान अहमद ने लिखा है, “हिंदी ग़ज़ल की परंपरा बहुत लंबी बताई जाती है। कहते हैं, इसकी शुरुआत अमीर खुसरों से हुई। मेरे ख्याल से यह मान्यता दुरुस्त नहीं है। बहुत-बहुत तो उनकी डेढ़

ग़ज़ले दूरस्थ पहाड़ की उंची चोटियाँ कही जा सकती हैं। एक तो यह, 'जब यार देखा नैन भर/दिल की गयी चिंता उतर' और आधी हिंदी ग़ज़ल उनके इस प्रसिद्ध दो सूखने में हैं, 'जेहाल-ऐ-मिस्कीं मकुन तगाफुल/ दुराय नैना बनाय बतियां' में। परंपरा इसे नहीं कहते कि वह एक शिखर बनाकर दो सौ साल तक आराम करे। फिर कबीर पैदा हों, तो एक और शिखर बनाएँ, 'हमन है इश्क मस्ताना/हमन को होशियारी क्या?' बताने वाले इस बीच के कई भजनों को भी हिंदी ग़ज़लें बताते हैं और अपनी हिंदी ग़ज़ल की परंपरा से प्रेम दिखाते हैं। माफ कीजिगा, मैं भजनों को ग़ज़लों की परंपरा में स्वीकार कर पाने की स्थिति में नहीं हूँ। फिर कई सौ साल बाद भारतेंदु आते हैं।..... इस तरह हिंदी ग़ज़ल के छः सौ साल पूरे हो जाते हैं। इस बीच उर्दू में धुआँधार ग़ज़लें लिखी जाती रहीं, मगर हमको उनसे क्या? भारतीय हिंदू के बाद बीसवीं सदी के प्रारंभ के कवियों मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, श्रीधर पाठक, जयशंकर प्रसाद आदि ने मनबहलाव के लिए ग़ज़ल की बहस के आकार में जो कुछ लिखा, क्या उन्हें वे ग़ज़लें कहना पसंद भी करते। मेरे ख्याल से ग़ज़ल की बहस में उन्हें घसीटना भी मुनासिब न होगा" (शताब्दी कविता, पृष्ठ 324-25)। सुल्तान अहमद ने अपने इस आलेख में निराला और दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों को भी बेबहर घोषित किया है। लेकिन उन्होंने शमशेर बहादुर सिंह को एक ग़ज़लगो के रूप में स्वीकार किया है। सुल्तान अहमद की दृष्टि में वही ग़ज़लें महत्वपूर्ण हैं, जिनमें सामाजिक चेतना हो।

आंबेडकरवादी ग़ज़लों का स्वरूप

आंबेडकरवादी ग़ज़लों का स्वरूप, सामान्य ग़ज़लों के स्वरूप से थोड़ा सा अलग है। आंबेडकरवादी ग़ज़लों के लिए आंबेडकरवादी चेतना से परिपूर्ण होना अनिवार्य है। आंबेडकरवादी चेतना के अभाव में, बहर तथा रदीफ़, काफ़िया आदि सभी नियमों का पालन करने के उपरांत भी कोई ग़ज़ल आंबेडकरवादी ग़ज़ल नहीं मानी जा सकती है। एक आंबेडकरवादी साहित्यकार अपनी ग़ज़लों में ईश्वर, भाग्य, आत्मा आदि के प्रति आस्था नहीं प्रकट करता है। वह अपनी ग़ज़लों में इन शब्दों का उल्लेख कर सकता है, लेकिन केवल नकार के भाव में; समर्थन में नहीं। आंबेडकरवादी चेतना के प्रमुख बिंदुओं में अनीश्वरवाद, अनात्मवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद के अतिरिक्त समता, स्वतंत्रता, न्याय बंधुत्व और प्रेम की भावना को सम्मिलित किया जाता है। समता का तात्पर्य है- लिंग, जाति, धर्म आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करना। यही कारण है कि नारीवाद को आंबेडकरवादी चेतना में शामिल नहीं किया जाता है। स्वतंत्रता का तात्पर्य 'अनियंत्रित स्वतंत्रता से नहीं है। बल्कि उस स्वतंत्रता से है, जो भारतीय संविधान में स्वतंत्रता के अधिकार के रूप में वर्णित है। इसी प्रकार प्रेम का तात्पर्य है- ईर्ष्या और घृणा भाव से रहित होना। दूसरे रूप में, प्रेम का तात्पर्य दोस्ती (समलैंगिक और विषमलैंगिक दोनों) से है। आंबेडकरवादी चेतना के अनुसार विषमलैंगिक प्रेम में सामाजिक भावना का होना अनिवार्य है। परिवार और समाज का तिरस्कार करके प्रेम (विषमलैंगिक) करना 'अवैध-संबंध' कहा जाता है। आंबेडकरवादी चेतना सामाजिक मर्यादा की पक्षधर है। बहुत से लोग कुंठित सोच रखते हुए श्रृंगारिक ग़ज़लों को आंबेडकरवादी चेतना के अंतर्गत शामिल नहीं करते हैं। लेकिन ध्यान रहे, श्लील और सामाजिक भावना से परिपूर्ण श्रृंगार रस की ग़ज़लें भी आंबेडकरवादी चेतना के अंतर्गत आती हैं।

आंबेडकरवादी ग़ज़लों की भाषा के संबंध में अधिकांश साहित्यकारों एवं आलोचकों को भ्रम है। हिंदी ग़ज़लों की भाषा के लिए जो मानदंड निश्चित किये गये हैं, वे सभी मानदंड आंबेडकरवादी ग़ज़लों के लिए स्वीकार्य हैं। यहाँ इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि हिंदी ग़ज़लों की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिंदी न होकर, उर्दू मिश्रित हिंदी होती है। लेकिन अरबी-फारसी के शब्दों का अत्यधिक प्रयोग आंबेडकरवादी ग़ज़लों के लिए आवश्यक नहीं है। फिर भी अल्प मात्रा में अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग करने से कोई आपत्ति नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि आंबेडकरवादी साहित्य के साहित्यकार अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्यिक हिंदी के उस रूप को अपनाते हैं, जो जनभाषा के निकट है।

“आंबेडकरवादी साहित्य” पत्रिका के इस संयुक्तांक में ग़ज़ल के विषय में कई महत्वपूर्ण आलेख संकलित किये गये हैं। आशा है कि इन आलेखों से लाभान्वित होकर आंबेडकरवादी चेतना की ग़ज़लें लिखने वाले साहित्यकार बहर के मुताबिक ग़ज़लें लिखने का प्रयास करेंगे।

-देवचंद्र भारती ‘प्रखर’





डॉ. आर. एम. राव 'मनोहर'

बरेली, उत्तर प्रदेश

मो. 7060240326



दीपदानोत्सव- एक समरसतावादी प्रपंच

समसामयिक ज्वलन्त समस्या का बिंदुवार विश्लेषण निम्नवत है

1.) ऐतिहासिक तथ्यों से परे....

(अ) कार्तिक अमावस्या को न बुद्ध का पुनरागमन हुआ न लोगों ने इस दिन प्रत्येक वर्ष दीप जलाये,

(ब) सम्राट अशोक ने विहारों, स्तूपों का उद्घाटन तो उत्सव रूप में किया होगा परन्तु उस उद्घाटन दिवस की वर्षगांठ नहीं मनाई अतः दीपदान उत्सव का प्रचलन हुआ हो ऐसे प्रमाण नहीं मिलते

(स) किसी दानदाता द्वारा अपने दान देने का उत्सव नहीं मनाया जाता फिर दीपदान उत्सव कैसे ?

भारतीय संस्कृति में नेकी कर दरिया में डाल और गुप्त दान महाकल्याण जैसी कहावतें ऐसे ही नहीं प्रचलित

(द) किसी अन्य प्रयोजन के उत्सव में दान किया जा सकता है परन्तु मूल आयोजन ही नियमित होता है न कि गौण क्रिया

(य) बुद्ध से संबंधित सारे प्रसंग जग जाहिर हैं परन्तु भारत के अतिरिक्त अन्य बौद्ध देशों में दीपदानोत्सव का उल्लेख या उत्सव का प्रचलन क्यों नहीं मिलता जबकि धम्म वहाँ उत्कृष्ट रूप में प्रचलित है।

(र) कार्तिक अमावस्या के दिन जिस धम्म के वरिष्ठ भिक्षु मोग्लायन की हत्या हो जाय तो उसीदिन उत्सव प्रचलित किया जाना कैसे तर्कसंगत हो सकता है

2. कुछ जातिवादियों की षडयंत्रकारी चाल...

इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि जो स्वयं दबंगों के षडयंत्रों के शिकार हों वही निहित जातिवादी मोह के स्वार्थवश अपनी ही संस्कृति को दूषित करने में लगे हों, ऐसा प्रतीत होता है कि दूषित करने में लगे हों, ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट अशोक के कुछ तथाकथित वंशज समरसता के वशीभूत राजनीतिक कुचक्र के शिकार हो गए हों अथवा चौथे वर्ण अर्थात् ओ बीसी के एक जाति विशेष अपनी मिथ्या ओ बी सी की एक जाति विशेष अपनी मिथ्या संप्रभुता कायन करने की मशा रखता हो, यहाँ यह स्पष्ट कर दूँ कि समरसता का तात्पर्य है असमानता को कुबूल कर लेना और भेड़चाल का शिकार होने के साथ अपने अस्तित्व को नकारना और समानता के अधिकार को छोड़ देना जो संविधान और आंबेडकरवाद दोनों के विरुद्ध है, यह भले सत्य हो कि बौद्धों के उत्सवों में फेरबदल कर देश के अन्य धर्म ने अंगीकार कर लिया, परन्तु विकृत रूप में पुनः बौद्धों द्वारा उन्हें क्यों स्वीकार किया जाय इसे असंस्कृति ही कहा जायेगा और कतई स्वीकार्य नहीं होगा

(3) राजनीतिक तुष्टवाद एवं धंधेबाजों के पक्षपाती... सरकारें भाईचारे सांप्रदायिक सौहार्द और अमन के नाम पर समरसता की बात को जोर शोर से प्रचारित करते हैं तथा प्रत्यक्ष या अपरोक्ष रूप में असमानता को स्वीकार कराने का बड़ी सफायी से अंजाम देते हैं और इसके लिए वे राष्ट्रवादी बनने की दुहाई देने से

भी नहीं चूकते, कर्मकांडों, कुप्रथाओं के द्वारा पहले से संपन्न वर्ग को और आर्थिक लाभ पहुंचाने की भरपूर मदद करते हैं, बाद में उन्हें चुनावी चंदे के रूप में वसूल लेते हैं यह सर्व विदित है कि यह सबसे खर्चीला पर्व है क्योंकि खरीददारी ही मुख्य कर्मकांडी विशेषता है इसकी आर्थिक क्षति पहुंचाने का षडयन्त्र है।

(4) अज्ञानता, अशिक्षा, मानसिक गुलामी बिना तर्क वजह ही अशिक्षा के कारण अज्ञानता और परिणामी मानसिक गुलामी ही होती है।

धन आने का लालच देकर जो धन है उसे भी लुटा देना है जुआ जैसी कुप्रथा और क्या है? अपने धर्म का प्रचार एवं ढोंग।

(5) अमोद प्रमोद के बहाने व्यसनी लोगों की गलत आदतें

पटाखे जला कर, जुआ खेल कर दूसरों के धन को क्षति पहुंचा कर कुछ लोगों को आनंद की अनुभूति होती है ऐसे लोग भी हवा दे रहे हैं, नयी नयी अपसंस्कृति फैलाने में

(6) देश के बौद्ध, भिक्खू, भंते, प्रबुद्ध लोगों की प्रमादी गतिविधियाँ.... बौद्ध धम्म प्रचारकों की दुर्बला, निजी स्वार्थ, अकर्मठता और अज्ञानता तथा झूठे वर्चस्व के निमित्त गुटबाजी एवं दिशाहीनता और अदूरदर्शिता के कारण भी दीप दानोत्सव जैसी गलत परम्पराओं का उदय होता है. यदि धम्म प्रचार न कर सकें तो कुप्रचार तो रोक सकते हैं.

(7) मानवीय दुर्बलता... लकीर के फ़क़ीर, दिखावा ढकोसलेबाजी, यथाथितिवादिता....

अपने पड़ोसियों, परिचितों को दिखाने के लिए उन्हीं का अंधानुकरण करने में अपने को गौरवान्वित समझते हैं. अधिकांश लोग परिवर्तन नहीं चाहते और किसी बड़े बदलाव का साहस नहीं जुटा पाते. कुछ तो भयभीत रहते हैं कि यदि ऐसा किया तो हमारे साथ

कुछ बुरा न हो जाए...

(8) असमानता के प्रश्रयवादियों का कुचक्र... दमनकारी वर्ग की चालें लोग समझ नहीं पाते वे ये न केन अपने साथ रख कर शोषण जारी रखना चाहते हैं और अपने धर्म के प्रसार के साथ अपने वर्ग के लोगों को लाभ पहुंचाने में पीछे नहीं रहते.

(9) आर्थिक एवं सामाजिक दबाव... जिनके यहाँ नौकरी करते हैं, जिनके कर्जदार हैं, जो गाहे बगाहे आर्थि मदद करते हैं, उन्हीं का अनुकरण करने का मजबूर होते हैं.

(10) मीडिया/टेलीवीजन पर एकतरफा प्रचार... इतना ग्लैमरस रूप और आकर्षक झूठे प्रचार देख लोग उसे ही सही और लाभकारी मानने लगते हैं.

(11) युवाओं की परम्परावादिता, भौतिकवादी आकर्षण, एवं अज्ञानता, धम्म से गैरजुड़ाव, अदूरदर्शी रवैया भी कुछ कारण होना संभव है.

(12) परिवार की अधिकांश महिलाएं भी बिना विचार किए परम्परा आगे बढ़ाती रहती हैं, घरेलू कलह से बचने के लिए अन्य सदस्य परिवर्तनकारी कदम नहीं उठाते.

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं कि दीप दानोत्सव अप्रमाणिक तो है ही, यह कुछ लोगों द्वारा अज्ञानता, अदूरदर्शिता के कारण स्वार्थवश फैलायी गयी गलत सांस्कृति परंपरा है जिसे

हतोत्साहित किया जाना आवश्यक है क्यों कि यह समरसता का प्रपंच मात्र है और भविष्य में असमानता को ही मजबूत करने वाली अपसंस्कृति साबित होगी. वैसे भी अन्य दिनों पर उत्सवों की कहाँ कमी हैं, खूब खुशियाँ मनाइये इस संदर्भ में निजी सलाह है कि 26 नवम्बर संविधान दिवस पर दीपोत्सव मनाया जाय बिना मूर्ति पुजा, बिना जुआ खेले, बिना प्रदूषण फैलाये और बिना महँगी खरीद दारी के।



ग़ज़ल में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द, उनके शाब्दिक अर्थ व ग़ज़ल के लिए प्रयुक्त अर्थ

ग़ज़ल - एक समान रदीफ (समांत) तथा भिन्न-भिन्न (कवाफी का बहुवचन) तुकांत से सुसज्जित एक ही वज़न (मात्रा क्रम अथवा बह (छंद) में लिखे गये अशर (शेर का बहुवचन) के समूह को ग़ज़ल कहते हैं, जिसमें शाइर किसी चिंतन, विचार अथवा भावना को प्रकट करता है।

शाइर/सुखनवर - उर्दू काव्य लिखने वाला

शाइरी - उर्दू काव्य लेखन

ग़ज़लगो - ग़ज़ल लिखने वाला

ग़ज़लगोई - ग़ज़ल लिखने की प्रक्रिया

शेर- एक समान रदीफ (समांत) तथा भिन्न-भिन्न कवाफी (काफिया का बहुवचन) तुकांत से सुसज्जित एक ही वज़न (मात्रा क्रम) अथवा बह (छंद) में लिखी गयी दो पंक्तियाँ, जिसमें किसी चिंतन, विचार अथवा भावना को प्रकट किया गया हो। उदाहरण स्वरूप दो अशरूप (शेर का बहुवचन) प्रस्तुत हैं-

फकीराना आए सदा कर चले

मियां खुख रहो हम हुआ कर चले।।2।।

(मीर तकी मीर)

अशूआर- शेर का बहुवचन

फर्द - एक शेर

मिस्रा - शेर की प्रत्येक पंक्ति को मिस्रा कहते हैं। इस प्रकार एक शेर में दो पंक्तियाँ अर्थात् दो मिस्रे

होते हैं।

मिस्रा ए ऊला- शेर की पहली पंक्ति को मिस्रा ए ऊला कहते हैं। 'ऊला' का शाब्दिक अर्थ है- 'पहला'। उदाहरण-

हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए। (मिस्रा-ए-ऊला इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।

-दुष्यंत कुमार

मिस्रा ए सानी - शेर की दूसरी पंक्ति को मिस्रा-ए-सानी कहते हैं। 'सानी' का शाब्दिक अर्थ है- 'दूसरा'। उदाहरण-

हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।। (मिस्रा-ए-सानी)

मिस्रैन- दो मिसरे

रदीफ - व समांतर शब्द अथवा शब्द समूह जो मत ग़ज़ल का पहला शेर के दोनों मिश्रों के अंत में आता है तथा अन्य आशा आरके मिश्रा इसानी अर्थात् दूसरी पंक्ति के अंत में आता है और पूरी ग़ज़ल में एक सा रहता है उसे रदीफ कहते हैं। उदाहरण -

आग के दरमियान से निकला

मै भी किस इम्तहान से निकला।

चाँदनी झाँकती है गलियों में

कोई साया मकान से निकला।

-शकेब जलाली

प्रस्तुत अशूआर में 'से निकला' रदीफ है।

काफिया- वह शब्द जो प्रत्येक शेर में रदीफ के ठीक पहले आता है और सम तुकांतता के साथ हर शेर में बदलता रहता है, उसे काफिया कहते हैं। शेर का आकर्षण काफिया पर ही टिका होता है। काफिया का जितनी सुंदरता से निर्वहन किया जाएगा, शेर उतना ही प्रभावशाली होगा। उदाहरण-

किस महूरत में दिन निकलता है

शाम तक सिर्फ हाथ मिलता है।

वक्त की दिल्लगी के बारे में सोचता हूँ तो दिल जलता है

-बाल स्वरूप राही

प्रस्तुता अशूआर में 'है' शब्द रदीफ है तथा उसके पहले के शब्द निकलता, मलता, दहलता सम तुकांत शब्द है तथा प्रत्येक शेर में बदल रहे हैं। इसलिए यह काफिया है।

मल्ला-ग़ज़ल का पहला शेर, जिसके दोनों मिस्रों में काफिया रदीफ होता है, उसे मल्ला कहते हैं।

उदाहरण-

बहुत रहा है कभी लुत्फ-ए-यार हम पर भी।

गुजर चुकी है यह फस्ल-ए-बहार हम पर भी।।(मल्ला)

खता किसी की हो लेकिन खुली जो उनकी ज़बाँ।

तो हो ही जाते हैं दो-एक वार हम पर भी।।

-अकबर इलाहाबादी

तखल्लुस- उर्दू काव्य विधाओं की रचनाओं के अंत में नाम अथवा उपनाम लिखने का प्रचलन है। उपनाम को उर्दू में तखल्लुस कहते हैं। उदाहरण-
हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है

वा हर इस बात पर कहना कि, यूँ होता तो क्या होता।

-असदउल्लाह खाँ ग़ालिब'

इस शेर में शाइर ने अपने तखल्लुस 'ग़ालिब' का प्रयोग किया है।

मक्ता - ग़ज़ल के आखिरी शेर को मक्ता कहते हैं। इस शेर में शाइर कभी-कभी अपना तखल्लुस (उपनाम) लिखता है।

उदाहरण-

अजनबी रात अजनबी दुनिया

तेरा 'मजरूह अब किधर जाए।

-मजरूह सुल्तानपुरी

यह मजरूह सुल्तानपुरी की ग़ज़ल का आखिरी शेर है, जिसमें उन्होंने अपने तखल्लुस 'मजरूह' (शाब्दिक अर्थ - घायल) का सुंदर प्रयोग किया है।

मुरद्दफ़ ग़ज़ल - रदीफ़वार। वह ग़ज़ल जिसमें रदीफ़ होती है, उसे मुरद्दक ग़ज़ल कहते हैं।

उदाहरण-

उनसे मिले तो मीना-ओ-सागर लिए हुए।

हमसे मिले तो जंग का तेवर लिए हुए।।

लड़की किसी गरीब की सड़कों पे आ गयी।

गाली लबों पे हाथ में पत्थर लिए हुए।। (जमील हापुड़ी)

प्रस्तुत अशूआर में लिए हुए' रदीफ है। इसलिए यह मुरद्दक ग़ज़ल है।

गैर मुरद्दफ़ ग़ज़ल- जिस ग़ज़ल में रदीफ़ नहीं होती है, उसे गैर मुरद्दक ग़ज़ल कहते हैं। उदाहरण-

जाने वाले तुझे कब देख सकूँ बारे दीगर।

रोशनी आँख की बह जाएगी आँसू बनकर।।

रो रहा था कि तेरे साथ हँसा था बरसों।

हँस रहा हूँ कि कोई देख न ले दीदा-ए तर।।(शाज़ तमकनत)

प्रस्तुत अशुआर के पहले शेर में मिसरे 'दीगर' 'कर' शब्द से समाप्त हुए हैं, जो कि समतुकांत हैं तथा अलग-अलग हैं। इसलिए स्पष्ट है कि यह रदीफ़ के न होकर काफिया के शब्द हैं और इस शेर में रदीफ़ नहीं है। इसी प्रकार आगे के शेर में भी काफिया को निभाते हुए 'तर' शब्द आया है। इससे सुनिश्चित होता है कि यह ग़ैर मुरदफ़ गज़ल है।

मुसल्लल ग़ज़ल का प्रत्येक शेर अपने आप में पूर्ण होता है तथा शाइर ग़ज़ल के प्रत्येक शेर में अलग-अलग भाव को व्यक्त कर सकता है। परंतु जब किसी ग़ज़ल के सभी अशुआर एक ही भाव को केंद्र मानकर लिखे गये हों, तो ऐी ग़ज़ल को मुसल्लल ग़ज़ल कहते हैं।

ग़ैर मुसल्लल ग़ज़ल-ग़ज़ल के प्रत्येक शेर अलग-अलग भाव को व्यक्त करें, तो ऐसी ग़ज़ल को ग़ैर मुसल्लल ग़ज़ल कहते हैं।

लाम-लाम का अर्थ होता है 'दीर्घ' औ इसे 2 मात्रा के लिए प्रयोग करते हैं। उर्दू का हर्फ़.गाफ़ हिंदी 'ग' के समान है। उदाहरण- अ =2 (यह भी ग़ज़ल की सबसे छोटी इकाई है।)

वज़न - मात्रा क्रम। किसी शब्द के मात्रा क्रम को उस का वज़न कहा जाता है।

रुक्न - गण, घटक, पद, निश्चित मात्राओं का पुंज। जैसे हिंदी छंदशास्त्र में गण होते हैं- यगण (222), तगण (221) आदि, उसी तरह ही उर्दू छंदशास्त्र 'अरूज़' में कुछ घटक होते हैं, जो रुक्न कहलाते हैं। उदाहरण - फा, फेल, फइलुन, फाइलुन, फाइलातुन, मुफाईलुन आदि।

अर्कान-रुक्न का बहुवचन।

बह-छंद। वह लयात्मकता जिस पर ग़ज़ल कही जाती है। उदाहरण - बह-ए-रमल, बह-ए-हज़ज, बह-ए-रजज, आदि।

इज़ाफ़त - उर्दू भाषा में इजाफ़त का नियम है, जिसके द्वारा दो शब्दों को अंतर्संबंधित किया जाता है। उदाहरण- 'नादान दिल' को 'दिल-ए-नादाँ' कहा जा सकता है। ऐसा करने को इजाफ़त कहते हैं।

रब्त - अंतर्संबंध।

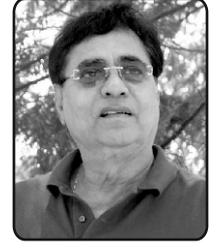
वाव-अत्फ़- उर्दू भाषा में जब दो शब्दों के बीच 'व' तथा आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है, तो वहाँ अत्फ़ का प्रयोग भी किया जा सकता है। जैसे - सुबह-ओ शाम। ऐसा करने को वाव अत्फ़ कहते हैं।

अलिफ़ वस्ल - नियम है कि यदि किसी शब्द के अंत में बिना मात्रा का व्यंजन आ रहा है। और उसके तुरंत बाद का शब्द दीर्घ स्वर से शुरू हो रहा है, तो व्यंजन और स्वर का योग किया जा सकता है। जैसे - राम आया = रामाया।

तक्तीअ - मात्रा गणना। वह तरीका, जिसके द्वारा यह परखा जाता है कि शेर निश्चित छंद (बह) में है अथवा नहीं। बा-बह ग़ज़ल लिखने के लिए तक्तीअ (मात्रा गणना) ही एकमात्र अचूक उपाय है। यदि शेर की तक्तीअ करनी आ गयी, तो देर-सवेर बह में लिखना भी आ जाएगा। क्योंकि जब किसी शाइर को पता हो कि मेरा लिखा शेर वे बह है तभी उसे सही करने का प्रयास करेगा और तब तक करेगा, जब तक वह शेर बा-बह न हो जाए। किसी शेर की तक्तीअ करने के लिए पहले शेर को लिखते हैं, फिर उसके नीचे उसका रुक्न लिखते हैं तथा एक-एक शब्द का रुक्न से मिलान करते हैं। इस प्रकार पता चल जाता है कि शेर निश्चित अर्कान के अनुरूप है अथवा नहीं।

वीनस केसरी

(‘ग़ज़ल की बाबत’ पुस्तक से साभार प्रस्तुत)



जिस दिन आधुनिक ग़ज़ल का जन्म हुआ!

“हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा”

प्रसिद्ध उर्दू कवि अल्लामा इकबाल के दोहे ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह की संगीत प्रतिभा का सार पकड़ते हैं। किंवदंती की 78 वीं जयंती पर, हम जगजीत सिंह के बाद आधुनिक ग़ज़ल की वर्तमान स्थिति पर कुछ संगीत उस्तादों से बात करते हैं जिन्होंने इस शैली को एक शानदार स्तर तक पहुँचाया।

आधुनिक ग़ज़ल के शिल्पकार

प्रख्यात शास्त्रीय, ग़ज़ल और भजन प्रतिपादक अनूप जलोटा का कहना है कि जगजीत सिंह निर्विवाद रूप से आधुनिक ग़ज़ल के महान वास्तुकार और प्रवर्तक हैं। शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित और प्रयोग के लिए एक दृष्टि, ज्ञान और नवीन कौशल के साथ संपन्न, जगजीत सिंह ने ग़ज़ल की पारंपरिक गायन शैली को एक नया आयाम दिया। ग़ज़लों में पश्चिमी वाद्य यंत्रों के प्रयोग के बारे में पूछे जाने पर, जलोटा ने दोहराया कि कला का कोई भी रूप परंपरा में रहता है लेकिन नवाचार के माध्यम से जीवित रहता है। “वास्तव में, ग़ज़ल को आधुनिक बनाना समय की आवश्यकता थी क्योंकि

उर्दू बोलने वाले लोग इन दिनों कुछ ही हैं। निश्चित तौर पर जगजीत सिंह के बाद एक खालीपन है।’

तरह-तरह के ट्रेंडसेटर

प्रख्यात ग़ज़ल उस्ताद चंदन दास का कहना है कि जगजीत सिंह ग़ज़ल गायकी में एक नया चलन लेकर आए, जिसने कला प्रेमियों को, विशेष रूप से उनके पहले एल्बम को, आनंदित कर दिया। सरल शब्दों में उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले गीत संगीत प्रेमियों द्वारा समझे जा सकते थे, जिन्हें अन्यथा मिर्जा ग़ालिब और अन्य जैसे प्रसिद्ध कवियों की गहरी कविताओं को समझने के लिए संघर्ष करना पड़ता था। इसने कविता के आकर्षण और फिल्मी संगीत की शैली को मिला दिया।

“खराज से भरपूर उनकी गहरी आवाज भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सबसे उपयुक्त थी। छंद और बहार का उनका चयन बहुत सटीक था, जो रचना के गीतात्मक इरादे से मेल खाता था।

बेशक ग़ज़ल बची हुई है, लेकिन इसकी लोकप्रियता निश्चित रूप से जगजीत सिंह के प्रतीक स्तर से नीचे आ गई है,” दास कहते हैं।

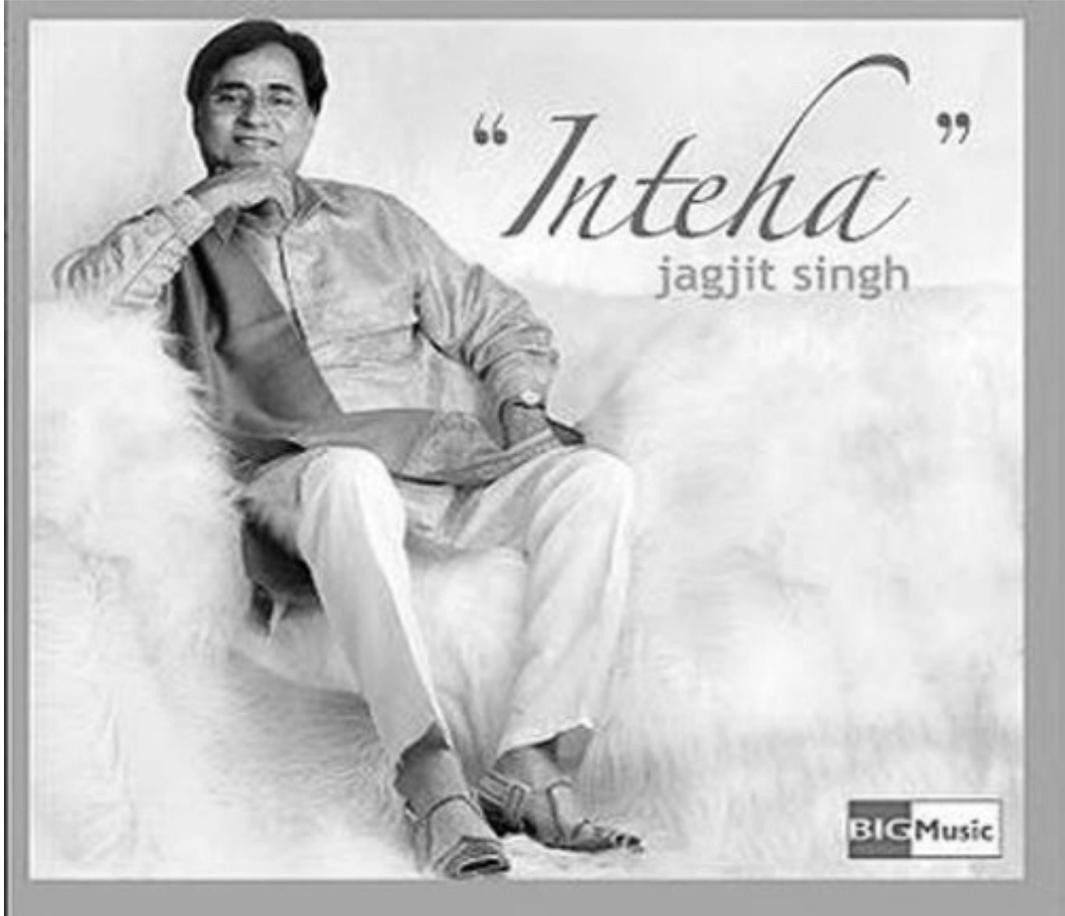
उनकी बहुमुखी प्रतिभा की कोई सीमा नहीं थी

क्षेत्र के प्रसिद्ध ग़ज़ल विनोद सहगल ने अपने उस्ताद जगजीत सिंह के साथ संबंध में 24 साल

बिताए हैं। विनोद ने साझा किया, “मैं अकेला शागिर्द था जगजीत जी यूएसए, कनाडा और यूके ले गए और मंच साझा करने को मौका दिया। गीतों के चयन में नई अवधारणाएँ बनाने, रचनाओं को अंतिम स्तर तक पहुँचाने पर काम करने तक उनकी बहुमुखी प्रतिभा की कोई सीमा नहीं थी। उन्होंने कड़ी मेहनत से पूर्णता हासिल की। “गज़ल की शैली जीवित रह सकती है लेकिन वर्तमान में दृश्य उत्साहजनक नहीं है लेकिन अजेय शैली और जगजीत सिंह की किंवदंती जीवित रहेगी। वास्तव में 8 फरवरी भारत में आधुनिक ग़ज़ल की जन्मतिथि है।”

खालीपन चमक रहा है

कोटा के शिक्षाविद् और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध गजल उस्ताद, डॉ रोशन भारती, उस्ताद गुलाम अली के भतीजे और उस्ताद जमाल खान के पोते हैं, जिन्होंने 12 साल तक जगजीत सिंह को शास्त्रीय संगीत की बारीकियाँ सिखाईं। उन्हें लगता है कि ‘गजल गायकी में खलीपन’ जरूर है, लेकिन नए गायक सामने आ रहे हैं। “दुर्भाग्य से नए कलाकार तत्काल मान्यता चाहते हैं और इस प्रक्रिया में अपनी शैली बनाए बिना किंवदंतियों की नकल करने का प्रयास करते हैं, जिसे चाचा जगजीत सिंह ने आगे बढ़ाया,” वे कहते हैं।





ग़ज़ल इस्मत बचाए फिर रही है ...

इसमें कोई शक नहीं कि अदब की जितनी भी विधाएं हैं उनमें सबसे मक़बूल (प्रसिद्ध) कोई विधा है वो है ग़ज़ल। दो मिसरों में पूरी सदी की दास्तान बयान करने की सिफ़त खुदा ने सिर्फ और सिर्फ ग़ज़ल को अता की है। यही वजह है कि जिसे देखो वही ग़ज़ल पे अपने की आजमाइश कर रहा है। ऐसा नहीं है कि ग़ज़ल कहने के लिए शाइर को उर्दू रस्मुल-खत (लिपि) आना ज़रीरी है मगर ग़ज़ल से सम्बंधित जो बुनियादी बातें हैं वे तो ग़ज़ल कहने वाले को पता होनी चाहिए। ऐसे बहुत से शाइर हैं जो उर्दू रस्मुल-खत नहीं जानते पर उन्होंने बेहतरीन ग़ज़लें कहीं हैं और उनके क़लाम की उर्दू वालों ने भी पज़ीराई की है। यहाँ एक बात ये भी कहना चाहूँगा कि अगर किसी ने ठान लिया है कि मैंने ग़ज़ल कहनी है तो उर्दू रस्मुल-खत ज़रूर सीखना चाहिए क्योंकि ग़ज़ल से मुतालिक बहुत सी ऐसी नाजुक चीज़ें हैं जिनके भीतर तक बिना उर्दू को जाने पहुँचना बड़ा दुश्चरतीरन है।

शाइरी जिंदगी जीने का एक सलीका है और शेर कहने की पहली शर्त है शाइर की तबीयत शाइराना होना। कुछ ग़ज़लकार अदब के नक्शे पे अपने होने का ज़बरदस्ती अहसास करवाना चाहते हैं उनकी ना तो तबीयत शाइराना है ना ही उनके मिजाज की सूरत किसी भी जाविये (कोण) से ग़ज़ल से मिलती है।

शाइरी की जुबान में शेर लिखे नहीं कहे जाते हैं। इस तरह के नकली शाइरों की ज़बराना लिखी ग़ज़लें नए

लोगों को ग़ज़ल से दूर कर रही है। इन दिनों अदब के हर हलके में चाटुकारों की तादाद बढ़ती जा रही है और ठीक उसी अनुपात में नए-नए ग़ज़लकार भी।

शकील जमाली की ताज़ा ग़ज़ल का एक शेर मुझे बरबस आ रहा है.... इस शेर को सुनने के बाद ही ये मज़मून लिखने का मन हुआ :-

ग़ज़ल इस्मत बचाए फिर रही है

कई शाइर है बेचारी के पीछे....

ग़ज़ल कर अपना एक अरूज़ (व्याकरण/छंद-शास्त्र) होता है। अरूज़ वो कसौटी है जिस पे ग़ज़ल परखी जाती है। यहाँ मेरा मकसद ग़ज़ल का अरूज़ सिखाना नहीं है मगर कुछ बुनियादी चीज़ें हैं जो ये तथाकथित सुखनवर ना तो जानते हैं और ना ही जानता चाहते हैं। अल्लाह करे ये छोटी-छोटी बातें तो कम से कम शाइरी के साथ खिलवाड़ करने वालों के ज़हन में आ जाए।

ग़ज़ल के पैकर (स्वरूप) को देखें तो ग़ज़ल और नज़्म (कविता) में बड़ा फर्क ये है कि ग़ज़ल का हर शेर अपना अलग मफहूम (अर्थ) रखता है जबकि कविता शुरू से लेकर हफे आखिर (अंतिम शब्द) तक एक उन्वान (शीर्षक) के इर्द-गिर्द ही रहती है।

ग़ज़ल कुछ शेरों के समूह से बनती है। “शेर” लफ़्ज़ का मतलब है जानना या किसी शै (चीज़) से वाकिफ़ होना। एक शेर में दो पंक्तियाँ होती हैं। एक पंक्ति को

मिसरा कहते हैं और दो मिसरे मिलकर एक शेर की तामीर (निर्माण) करते हैं। किसी शेर के पहले मिसरे को “मिसरा ऐ उला” और दूसरे मिसरे को “मिसरा ऐ सानी” कहते हैं। किसी भी शेर के दोनों मिसरों में रब्त (सम्बन्ध) होना बहुत ज़रूरी है इसके बिना शेर खारिज माना जाता है।

बहर वो तराजू है जिस पे ग़ज़ल का वज़न तौला जाता है इसे वज़न भी कहते हैं। बहर में शेर कहना उतना आसान नहीं है जितना आजकल के कुछ फोटोस्टेट शाइर समझते हैं। मोटे तौर पे उनीस बहरें प्रचलन में हैं। बहर को कुछ लोग मीटर भी कहते हैं। जो शाइर बहर में शेर नहीं कहते उन्हें बे-बहरा शाइर कहा जाता है और हमारे अहद का अलमिया (विडंबना) ये है कि रोज़ व रोज़ ऐसे शाइर बढ़ते जा रहें हैं। बहर को समझना एक दिन का काम नहीं है और ना ही सिर्फ़ किताबें पढ़कर बहर की पटरी पे शाइरी की रेल चलाई जा सकती है। बहर का मुआमला या तो शाइरी के प्रति जुनून से समझ में आता है या फिर बहर की बहर की समझ कुछ शाइरों को खुदा ने बतौर तोहफा अता की है।

रदीफ़ : - शाइरी में हुस और खयालात में फैलाव के लिए ग़ज़ल में रदीफ़ रखा जाता है। ग़ज़ल को लय में सजाने में रदीफ़ का अहम् रोल होता है। मिसाल के तौर पे मलिकज़ादा “जावेद” साहब का ये मतला और शेर देखें:-

मुझे सच्चाई की आदत बहुत है।

मगर इस राह में दिक्कत बहुत है।।

किसी फुटपाथ से मुझको ख़रीदो।

मेरी शो में कीमत बहुत है।।

इस ग़ज़ल में “बहुत है” रदीफ़ है जो बाद में ग़ज़ल के हर शेर के दूसरे मिसरे यानी मिसरा ए सानी में बार-बार आता है

काफ़िया :- काफ़िया ग़ज़ल का महत्पूर्ण हिस्सा है बिना काफ़िए के ग़ज़ल मुकम्मल नहीं हो सकती। शेर कहने से पहले शाइर के ज़हन में खयाल आता है और फिर वो उसे शाइरी बनाने के लिए रदीफ़ काफ़िए तलाश करता है। काफ़िए का इत्तेखाब (चुनाब) शाइर को बड़ज़ सोच-समझ कर करना चाहिए। ग़ज़ल काफ़िए का इस्तेमाल शाइर की मखौल उड़वा देता है। राहत इन्दौरी का ये मतला और शेर देखें :-

अपने अहसास को पतवार भी कर सकता है।

हौसला हो तो नदी पार भी कर सकता है।।

जागते रहिये, की आवाज़ लगाने वाला।

लूटने वाले को होशियार भी कर सकता है।।

इसमें पतवार, पार, होशियार काफ़िर हैं और “भी कर सकता है”

रदीफ़ है। जिस शेर में दोनों मिसरों में काफ़िया आता हो उसे मतला कहते हैं। किसी ग़ज़ल की आगे की राह मतला ही तय करता है। मतले में शाइर जो काफ़िए बाँध देता है फिर उसी के अनुसार उसे आगे के शेरों में काफ़िर रखने पड़ते हैं। जैसे किसी शाइर ने मतले में किनारों, बहारों का काफ़िया बांधा है तो वह शाइर पाबन्द हो गया है कि आगे के शेरों में आरों का ही काफ़िया लगाए ना कि ओ का काफ़िया जैसे पहाड़ों, खयालों का काफ़िया। हिन्दी ग़ज़ल के बड़े शाइर दुष्यंत कुमार ने भी अपनी ग़ज़लात में गलत काफ़िर बांधे और तनकीद कारों को बोलने का मौका दिया। दुष्यंत कुमार की एक बड़ी मशहूर ग़ज़ल है :-
कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए।

कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।

वे मुतमईन है कि पत्थर पिघल नहीं सकता।

मैं बेकरार हूँ आवाज़ में असर के लिए।।

इस गज़ल के मतले में “घर” के साथ “शहर” का काफ़िया जायज़ नहीं है, दुष्यंत साहब जैसे शाइर ने फिर अगले शेर में “असर” का काफ़िया लगाया उसके बाद इसी गज़ल में उन्होंने “नजर” “बहर”, “गुलमोहर” और “सफर” के काफिर बांधे। इस पूरी गज़ल में शहर और बहर के काफिए का इस्तेमाल दोषपूर्ण है। दुष्यंत कुमार की इसके लिए बड़ी आलोचना भी हुई।

गज़ल काफिए को शेर में बरतना शाइर की मुआफ नहीं करने वाली गलती है। ये सब बातें यूँ ही नहीं आती हैं इसके लिए अच्छा मुताला (अध्ययन) होना जरूरी है मगर लोगों को पढ़ने का तो वक्त ही नहीं है बस कलम और कागज पर कहर बरपा के सिर्फ छपने का शौक है। स्वयंभू गज़लकारों के अखबारात और रिसालों में छपने की इस हवस ने सबसे ज़ियादा नुकसान शाइरी का किया है।

वापिस गज़ल पे आता हूँ... शाइर अपने जिस उपनाम से जाना जाता है उसे “तखल्लुस” कहते हैं और अपने तखल्लुस का जिस शेर में शाइर इस्तेमाल करता करता है वो शेर “मकता” कहलाता है।

मासूम परिंदों को आता ही नहीं “निकहत”।

आगाज़ से घबराना, अंजाम से डर जाना।।

ये मकता डॉ. नसीम “निकहत” साहिबा का है, शाइरा ने इस शेर में अपने तखल्लुस का इस्तेमाल किया है सो ये मकता हुआ।

गज़ल से त-अल्लुक रखने वाली जिन बातों का मैंने जिक्र किया, अपने ख्यायालात को गज़ल बनाने के लिए सिर्फ इतना जान लेना ही काफी नहीं है। गज़ल कहने के लायक बनने के लिए और भी बहुत से कायदे-कानून/ऐब-हुनर हैं जिन्हें एक शाइर को सीखना चाहिए।

शाइरी में कुछ ऐब है जिन्हें शुरू-शुरू में हर शाइर नजरंदाज़ करता है। ये ऐब अच्छे-भले शेर और शाइर को तनकीद वालों (आलोचकों) के कटघरे में खड़ा कर देते हैं।

शतुरगुबा ऐब... शतुर माने ऊंट और गुरबा माने बिल्ली यानी ऊंट-बिल्ली को एक साथ ले आना इस ऐब को जन्म देता है। ग़फ़लत में शाइर ये ग़लती कर जाता है। जैसे पहले मिसरे में “अप” का इस्तेमाल हो और दूसरे में “तम” का प्रयोग करे या यूँ कहें कि संबोधन में समानता ना हो तो शतुरगुरबा ऐब हो जाता है।

गज़ल में कभी “लफ़्ज का इस्तेमाल नहीं होता इसकी जगह सिफ “न” का ही प्रयोग किया जाता है, “ना” का इस्तेमाल सिर्फ उस जगह किया जाता है जहाँ “ना” हाँ की सूरत में हो जैसे भाई पवन दीक्षित का ये शेर :-

पारसाई न काम आई ना।

और कर ले शराब से तौबा।।

जम :- कई बार शाइर ऐसा मिसरा लगा देते हैं जिसका अर्थ बहुत बेदूदा निकला है, या शाइर से ऐसे लफ़्ज का अनजाने में इस्तेमाल हो जाता है जिसके मआनी फिर शाइरी की तहजीब से मेल से मेल खाते। जम के ऐब से शाइर को बचना चाहिए।

कई बार शाइर बहर के चक्कर में अब, ये, तो, भी, वो आदि लफ़्ज बिन वजह शेर में डाल देता है जबकि कहन में उस लफ़्ज की कोई जरूरत नहीं होती। शाइर को भर्ती के लफ़्जों के इस्तेमाल से भी बचना चाहिए। जहाँ तक शाइरी में ऐब का सवाल है और भी बहुत से ऐब हैं जिन्हें एक शाइर अध्ययन और मशक कर-कर के अपने कहन से दूर कर सकता है।

शाइरी में ऐब इतने ढूँढे जा सकते हैं कि जिनकी गिनती करना मुश्किल है मगर जहाँ तक हुनर का

सवाल है वो सिर्फ एक ही है और वो है “बात कहने का सलीका”। अपने अपने ख्याल को कागज पे सलीके से उतारना आ जाए तो समझो उस शाइर को शाइरी का सबसे बड़ा हुनर आ गया है। एक सलीकामंद शाइर बेजान मफ़हूम और गिरे पड़े लफ़्जो को भी अपने इसी हुनर से खूबसूरत शेर में तब्दील कर सकता है। जाया साहब के ये मिसरे मेरी इस बात की पुरजोर वकालत कर सकते हैं :-

कट रही है जिंदगी रोते हुए।

और वो भी आपके होते हुए।।

इसी तरह शमीम बीकानेरी साहब का एक मतला और शेर बतौर मिसाल अपनी बात को और पुख्ता करने के लिए पेश करता हूँ :-

रातों के सूनेपन से घबरायें क्या।

ख्याब आँखों से पूछते हैं, हम आयें क्या।

बेवा का सा हुस्न है दुनिया का यारों।

मांग इसकी सिन्दूर से हम भर जायें क्या।।

मामूली से नज़र आने वाले लफ़्जों को इस तरह के मेयारी शेरों की माला में मोती सा पिरो देने का कमाल एक दिन में नहीं आता इसके लिए बहुत तपस्या करनी पड़ती है, शाइरी की इबादत करनी पड़ती है। और अपने बुजुर्गों के पाँव दबाने पड़ते हैं। मनुनव्वर राना ने यूँ ही थोड़ी कहा है :-

खूद से चलकर नहीं ये तर्जे-सुखन आया है।

पाँव दाबे हैं बुजुर्गों के तो फन आया है।।

ग़ज़ल कहने के लिए सबसे चीज है आपके पास एक खूबसूरत ख्याल का होना। उसके बाद उस ख्याल को मिसरों में ढालने के लिए मेयार के लफ़्ज भी होने चाहिए। लफ़्ज अकेले शाइरी में नहीं ढल सकते इसके लिए एक शाइर के पास अहसासात की दौलत होना बहुत जरूरी है। एक शाइर के पास

अल्फाज का खजाना भी इतना समृद्ध होना चाहिए कि उसके जहन में अगर कोई ख्याल आये तो उसे लफ़्जों के अकाल के चलते मायूस ना लौटना पड़े।

ग़ज़ल का एक-एक शेर शाइर से मश्क (मेहनत) है। किसी शाइर का सिर्फ एक मिसरा सुनकर इस बात को बा-आसानी कहा जा सकता है कि इन साहब को शेर कहने की सलाहियत है या नहीं।

एक और अहम् चीज शाइरी को संवारती है वो है इस्लाह (सलाह-मशविरा)। कुछ ऐसे ग़ज़लकार हैं जो अपनी तखलीक को ही सब कुछ समझते हैं। किसी जानकार से सलाह लेना उन्हें अपनी अना के कद को छोटा करने जैसा लगता है। शाइरी में इन दिनों उस्ताद-शागिर्द की रिवायत का कम हो जाना भी शाइरी के मेयार के गिरने की एक बड़ी वजह है।

जिस शाइर में आईना देखने का हौसला है, अपने कलाम पे हुई सच्ची तनकीद (समीक्षा) को सुनने का मादा है तो उस शाइर का मुस्तकबिल यकीनन सुनहरा है। जो तथाकथि शाइर बिना मशककत किये बस छपने के फितूर में कलम घिसे जा रहे हैं वे ग़ज़ल और पाठकों के साथ-साथ खुद को भी धोखा दे रहें हैं।

छपास के शौकीनों ने ग़ज़लों के साथ-साथ दोहों पर भी कोई कम जुल्म नहीं ढाये हैं। दोहे का अरूज भी ग़ज़ल जैसा ही है, ग़ज़ल उनीस बहरों में कही जाती हैं दोहे की बस एक ही बहर होती है। सरगम सरगम सारगम, सरगम सरगम सार।

ग़ज़ल कहलन के लिए कम से कम आठ-दस काफिए आपके जहन में होने चाहियें मगर दोहों में तो सिर्फ दो ही काफियों की जरूरत होती है तो भी अपने आप को मंज़ा हुआ दोहाकर कहने वाले ऐसे-ऐसे दोहे लिख रहे हैं जिनके बरते हुए काफिए आपस में ही झगड़ते रहते हैं। ऐसे दोहों से त्रस्त होकर मैंने एक

दोहा लिखा था :-

दोहे में दो काफिए, दोनों ही बे-मेल।

ना आवे जो खेलना, क्यूँ खेलो वो खेल।।

ग़ज़ल के शेर और दोहे छंद की मर्यादा में कहे जाते हैं। बिना बहर और छंद के इल्म के इन दोनों विधाओं पे हाथ आजमाना सिर्प अपनी हंसी उड़वना है। ग़ज़ल के सर से दुपट्टा उतारने वाले ये क्यूँ नहीं समझते कि पाठक इतने बेवकूफ नहीं हैं जितना वे समझते हैं। एक अलमिया ये भी है कि बहुत से जानकार लोग सब कुछ जानते हुए भी इनकी गललों की तारीफ कर देते हैं जिससे इन नकली सुखनवरों का हौसला और बढ़ जाता है। अपने जाती मरासिम (सम्बन्ध) बनाए रखने के लिए कुछ मोतबर शाइर भी ग़ज़ल के श्रंगार से छेड़-छाड़ करने वालों की शान में जब कसीदे पढ़ते हैं तो ऐसे अदीब (साहित्यकार) भी मुझे ग़ज़ल के दुश्मन नज़र आते हैं।

मैं जानता हूँ ये मज़मून बहुत से लोगों के सीने पे सांप की तरह रेंगेगा मगर ये कड़वी बातें मैंने शाइरी के हित में ही लिखी हैं। ग़ज़ल से बे-इन्तेहा मुहब्बत ने मुझे ये सब लिखने की हिम्मत दी है। मैं जानता हूँ जाती तौर पे मुझे इसका नुकसान भी होगा, कुछ अदब के मुहाफिज नाराज भी हो जायेंगे खैर ये सच बोलने के इन आम हैं। जब पहली मरतबा ये पुरस्कार मुझे मिला तो ये पंक्तियाँ खुद व खुद हो गयी थी :-

इक सच बोला और फिर, देखा ऐसा हाल।

कुछ ने नज़रें फेर लीं कुछ की आँखें लाल।

ग़ज़ल का ये बड़प्पन है कि वो उनको भी अपना समझ लेती है जो उसके साथ चलने की तो छोड़िये साथ खड़े होने के भी काबिल नहीं हैं। अपने आपको शाइर समझने वाले ग़ज़ल के खिदमतगारों से मेरी गुजारिश है कि ग़ज़ल कहने से पहले इसे कहने का

हक रखने के लायक बने। ग़ज़ल कहने से पहले उसके तमाम पेचो-खम के बारे में जाने। शाइरों का काम आबरू ए ग़ज़ल की हिफाजत करना है ना कि ग़ज़ल कहने से पहले उसके तमाम पेचो-खम के बारे में जानें। शाइरों का काम आबरू ए ग़ज़ल की हिफाजत करना है ना कि ग़ज़ल को बे-बिलास करना। केवल तुक मिलाने से सुखनवर होने का सुख नहीं मिलता जहाँ तक तुकबंदी का सवाल है तुकबंदी तो लखनऊ, दिल्ली और लाहौर के तांगे वाले भी इन शाइरों से अच्छी कर लेते हैं। ग़ज़ल से बिना मुहब्बत किये उसकी मांग भरने की ख्वाहिश रखने वाले इन अदीबों से एक और इसरार (निवेदन) कि छपने और शुहरत के चस्के में ऐसा कुछ ना लिखें जिससे जन्नत में आराम फरमा रही मीर ओ गालिब की रूहों का चैन और सुकून छीन जाए और यहाँ जमीन पे ग़ज़ल का दामन उनके आंसुओं से तर हो जाए।

परवददिगार से ग़ज़ल के हक में यही दुआ करता हूँ कि खुद को शाइर समझने का वहम पालने वाले ग़ज़ल को बेवा ना समझें, ग़ज़ल कहने से पहले उसे कहने की सलाहियत, अपने जुनून, अपनी मेहनत, अपनी साधना से हासिल करें ताकि ग़ज़ल भी अदब के बाजार में इटलाती हुई चल सके और खाकसार को अपने दिल पे ग़ज़ल की पीड़ा का टनों बोझ लेकर किसी शाइर को जो तथाकथित ग़ज़लकार कहना पड़ता है वो फिर से ना कहना पड़े। आखिर में तथा कानपुरी के इसी मतले के साथ इजाज़त चाहता हूँ...

एक भी शेर अगर हो जाए।

अपने होने की खबर हो जाए।।



क्या है ग़ज़ल?

“क्या है ग़ज़ल ” ‘नसीम रिफअत’ ग़ज़ल पर बात करने से पहले जरूरी है कि ग़ज़ल के बुनियादी पहलुओं पर रौशनी डाली जाए ताकि हमें यह मालूम हो सके कि ग़ज़ल क्या है? ग़ज़ल की शुरुआत मतले से होती है और मतला मुखड़े को कहते हैं जिसमें दो पंक्तियाँ होती हैं। हर पंक्ति को मिसरा कहते हैं, मतले में दोनों मिसरों में रदीफ काफिये होते हैं और हर ग़ज़ल में होते हैं। काफिया रदीफ के पहले का तआल्लुक दूसरे शेर में नहीं होता। चन्द ग़ज़ल ऐसी भी होती हैं जिनका मतले से मकते तक तआल्लुक होता है उन्हें मुसलसल ग़ज़ल कहा जाता है। और चन्द ऐसी होती हैं जिनमें काफियाही काफिया होता है रदीफ नहीं होती, उन्हें गैर मुद्दक कहा जाता है, शेर के ऊले मिसरे में किसी भी ग़ज़ल में रदीफ काफिये होते हैं। ग़ज़ल के आखिरी शेर में शायर का शायराना नाम यानी तखल्लुस होता है जिसे मकता कहते हैं। और सबसे अच्छे शेर को बैतूल ग़ज़ल या शाह बेत कहते हैं। और अगर मतले के बाद ग़ज़ल में दूसरा मतला हो तो उसे हुस्पे मतला या साईं मतला कहा जाता है। मिसाल के तौर पर गैर मुद्दक ग़ज़ल का मुलाहिजा कीजिए-

“मैंने तो बहुत चाहा था कि तुमसे न रहूँ दूर
लेकिन ये कहाँ था मेरी तकदीर को मंजूर।”

अब रदीफ काफिये वाली ग़ज़ल के शेर जो कि

अब्बास दाना साहब के हैं मुल्लाहिजा फरमाइये :-

“जिनको बहुत गरूर था उंची उड़ान पर।

कल उनकी लाश देखी गई इक चटान पर।।

अब सर पे चोट खाई तो अहसास हो गया,

पत्थर न फेंकना था उसे आसमान पर।

दुनिया-ए-फन को नाज़ है ‘दाना’ ग़ज़ल पे आज,

लेकिन ग़ज़ल को नाज़ है उर्दू ज़बान पर।”

दाना साहब के मतले के ऊले मिसरे में काफिया “उड़ान” है और रदीफ “पर” है। सानी मिसरे में काफिया ‘चटान’ है और रदीफ वही ‘पर’ है। मतले के बाद शेरों की बारी आती है। शेर के ऊले मिसरे में रदीफ काफिया नहीं है, सानी मिसरे में आसमान काफिया और रदीफ वही “पर” है। इसी तरह मकते में भी ऊल मिसरा रदीफ काफिये की कैदे से आजाद है और साईं मिसरे में काफिया ‘ऊर्दू ज़बान’ है और रदीफ अपनी जगह कायाम है। ग़ज़ल के और बहुत से तकाजे हैं इसलिए कुछ खास-खास बातें बताना भी निहायत जरूरी है ताकि नौ उम्र फनकार अगर गज़ल कहे तो से तकाजे हैं इसलिए कुछ खास-खास-खास बातें बताना भी निहायत जरूरी है ताकि नौ उम्र फनकार अगर ग़ज़ल कहे तो उन्हें भटकन न हो। जैसे ग़ज़ल में बहर का वज्ज और सेहत अल्फाजी का भी बहुत ख्याल रखा जाता है। ग़ज़ल बुनियादी तौर से अरब की पैदावार है, इसका नाम, इसका

जिस्म और इसकी रूह सब अरबी ज़बान-ओ-अदब की देन है। और इसे शोहरत ईरान में फारसी ज़बान से हासिल हुई है। खलील बिन अहमद जो अरब के एक इलाके बसरे का रहने वाला था और अपने वक्त का ज़बरदस्त आलिम था और ये अरबी ऊरूज़ का भी मूजिद था। जो आठवीं सदी सन् 721 ई. से सन् 787 ई. तक इस दुनिया में रहा। ये यूनानी ऊरूज़ से वाकिफ़ था इसलिए इसे अरबी उरूज़ की ईजाद में यूनानी ऊरूज़ से मदद मिली। चन्द लोगों का ख्याल है कि इन्हें हिन्दी की भी मालूमात थी। और ये फ़ारसी अदब से भी वाकिफ़ था। लिहाज़ा इसने ग़ज़ल के लिए पन्द्रह (15) बहरें तैयार की। जिनका अलग-अलग वज़न और अलग-अलग नाम हैं। खलील बिन अहमद की 15 बहरों में से ग्यारह बहरें उर्दू अदब ने कबूल की हैं जिनमें से चंद राइज़ हैं। ये ग्यारह बहरें इस तरह हैं:-

1. बहरे हजज़
2. बहरे रज़ज़
3. बहरे रमल
4. बहरे मुतकारिब
5. बहरे कामिल
6. बहरे मुन्सरेह
7. बहरे मुजरेअ
8. बहरे सरीअ
9. बहरे ख़फीफ़
10. बहरे मुजतस
11. बहरे मुक्तजब।

एक बहर और है बहरे मुतादारिक, जिस पर मूजिद का नाम अबुल हसन अख़फ़श है। ये बहर भी उर्दू में राईज़ है। खलील बिन अहमद की बाकी चार बहरें हैं :- बहरे तवील, बहरे मुदीद, बहरे बसीत और बहरे वाफ़र खास तौर से अरबी जुबान के लिए है। तीसरे मूजिद बरजच बरजच मरहर है इनकी ईजाद कर्दा बहर बहरे जदीद है और चौथे मूजिद का नाम युसूफ़ नेशापुरी है, इनकी ईजाद कर्दा बहर बहरे करीब है। एक नामालूम शख्स की बहर का नाम बहरे मशकिल है। ये तीनों बहरे फारसी ज़बान में इस्तेमाल की जाती रही हैं इस तरह बुनियादी तौर से

शायरी की दुनिया में कुल उनीस बहरें हैं जो अरकन की तब्दीलियों से एक बहर में से कई बहरें तैयार की गई हैं। जिन्हें महजूफ़ बहरे कहा जाता है इन बहरों को शामिल करके आज ग़ज़ल की दुनिया में कुल छियत्तर (76) बहरे हैं।

1- बहरे हजज़ सालिम (मूज़िद ; खलील बिन अहमद)

मफाईलुन-मफाईलुन-मफाईलुन-मफाईलुन :-

“लगा दी आ-ग ये किसने-तमान्नाओं-कि बस्ती में लगा दी आग ये किसने तमान्नाओं की बस्ती में

(अ) बहरे हजज़ मुसम्मन अख़रब :-

मफ़ऊल-मफाइल-मफाइल-फऊलुन :-

“है प्यार-तो फिर प्यार-का इज़हार करो ना”

है प्यार तो फिर प्यार का इज़हार करो ना

(ब) बहरे हजज़ मुसम्मन अख़रब मकफूफ़ महजूब :-

मफ़ऊल-मफाईलुन-मफ़ऊल-मफाईलुन :-

“जो मिल के - नहीं मिलता-वो अदा-मि क्या होगा”

जो मिल के नहीं मिलता वो अदामि क्या होगा

(स) बहरे हजज़ मुसम्मन अशतर

फाइलुन-मफाईलुन-फाइलुन-मफाईलुन :-

“मैं ग़ज़ल -के लहजे में-तेरी बात करता हूँ”

मैं ग़ज़ल के लहजे में तेरी बात करता हूँ

(द) बहरे हजज़ मकसूर महजूफ़ :-

मफाईल-मफाईल-मफाईल-फऊलुन

“मेरे यार-तेरी बात-मुझे याद-रहेगी”

मेरे यार तेरी बात मुझे याद रहेगी

(इ) बहरे हजज़ मुजद्दस मकसूर:-

“मिरी आँखों-ने देखे हैं-तिरख़्वाब”

मिरी आँखों ने देखे हैं तिरख़्वाब

(फ) बहरे हजज मुजद्दस अखरब मकबूज अशतर
मुसबिग:-

मफऊल-मफाईलुन-मफाईलान :-

“तू याद-मिरी दिल से-भुला दे यार”

तू याद मिरी दिल से भुला दे यार

(ग) बहरे हजज मुजद्दस अखरब मकबूज :-

मफऊल-फायलुन-मफाईलुन

“क्या खूब-दिल रुबा-हमारा है”

क्या खूब दिल रुबा हमारा है

(ह) बहरे हजज मुजद्दस अखरब मकबूज :-

मफइल-मफाईलुन-फऊलुन

“वो शख्स तो हो गया-पराया”

वो शख्स तो हो गया पराया

(ई) बहरे हजज मुजद्दस अखरब मकबूज अशतर :-

मफऊलुन-फाईलुन-फऊलुन

“दिल कितना- आइना है उसका

दिल कितना आइना है उसका

(ज) बहरे हजज मुजद्दस अखरब मकबूज मकसूर :-

मफऊल-मफाईलुन-मफाईल

“ऐ यार-नहीं है तू वफादार”

ऐ यार नहीं तू वफादार

2. बहरे रजज सालिम (मूजिद खलील बिन
अहमद):-

मुरतफऐ लुन-मुरतफऐ लुन-मुरतफऐ लुन-
मुरतफऐ लुन

“परदा उठा-जलवा दिखा रूहे सुखन-जाने गजल”

परदा उठा जलवा दिखा रूहे सुखन जाने गजल

महजूफ बहरें

(अ) बहरे रजज मुसम्मन मतवी मजनून:-

मुफ्तऐलुन-मुफाईलुन-मुफ्तऐलुन -मुफाईलुन

“ऐ दिल जा-रये बता तू है कहाँ-कहाँ हूँ मैं”

ऐ दिल जा ये बता तू है कहाँ हूँ मैं

(ब) बहरे रजज मुसम्मन मतवी :-

मुफ्तऐलुन-मुस्तफऐलुन-मुफ्तऐलुन-मुस्तफऐलुन :-

“इश्क में हम-पहलें जुनूँ-दिल का कहा करते रहे”

इश्क में हम पहले जुनूँ दिल का कहा करते रहे

(स) बहरे रजज मुसद्दस :-

मुस्तफऐलुन-मुस्तफऐलुन-मुस्तफऐलुन

“इश्क में हम-एहले जुनूँ-दिल का कहा करते रहे”

इश्क में हम एहले जुनूँ दिल का कहा करते रहे

(द) बहरे रजज मुसद्दस मतवी :-

मुफ्तऐलुन-मुफ्तऐलुन-मुफ्तऐलुन

“तुम जो मिले-मुझको मिला-अपन पता”

तुम जो मिल मुझको मिला अपना पता

3. बहरे रमल सालिम (मूजिद खलील बिन
अहमद):-

फायलातून-फायलातून-फायलातून-फायलातून :-

“दोस्ती में दुश्मनी की कोई गुंजा-इश नहीं है”

दोस्ती में दुश्मनी की कोई गुंजाइश नहीं है

महजूफ बहरें

(अ) बहरे रमल मुसम्मन मकसूर:-

फायलातून-फायलातून-फायलातून-फायलातून :-

“प्यार तो वो-है कि जो रह-जाए बन कर-यादगार”

प्यार तो वो है कि जो रह जाए बन कर यादगार

(ब) बहरे रमल मुसम्मन महजूफ:-

फायलातून-फायलातून-फायलातून-फायलातून

“मिरी दास्-तां में शामिल-कई और-नाम क्यूँ हो”
 मिरी दास्ताँ में शामिल कुई और नाम क्यूँ हो
 (द) बहरे रमल मुसम्मन मजनून मशअस मखसूर :-
 फायलातुन-फयेलातुन-फयेलातुन-फयेलातः-
 “तेरे दम से-हैं दिल के गुलिसतां-में बहारें”
 तेरे दम से है दिल के गुलिसतां में बहारें
 (फ) बहरे रमल मुसद्दस मजनून मशअस मकसूर:-
 फायलातुन-फयेलातुन-फयेलान
 “सुन रहा हूँ-मैं किसी की आवाज”
 सुन रहा हूँ मैं किसी की आवाज
 4. बहरे मुताकारिब सालिम (मुजिद बिन अहमद) :-
 फऊलुन-फऊलुन-फऊलुन-फऊलुन:-
 “जो किस्मत-दिखाती-है हम देखते हैं”
 जो किस्मत दिखाती है हम देखते हैं
 महजूफ बहरें
 (अ) बहरे मुताकारिब मुसम्मन मकसूर:-
 फऊलुन-फऊलुन-फऊलुन-फऊलः-
 “रहे अज-नबी हम-तिरे शह-र में”
 रहे अजनबी हम तिरे शहर में”
 (ब) बहरे मुताकारिब मुसम्मन महजूफ:-
 फऊलुन-फऊलुन-फऊलुन-फऊलुन:-
 “नदी प्यार की अब समन्दर हुई”
 नदी प्यार की अब समन्दर हुई
 (स) बहरे मुताकारिब मुसम्मन मकबूज असलम:-
 फऊज-फेलुन-फऊल- फलुन:-
 “मुझे नई जिन्दगी मिलेगी”
 मुझे नई जिन्दगी मिलेगी
 (द) बहरे मुताकारिब मकबूज असलम सोला
 रुकनी:-

फऊल-फेलुन-फऊल-फेलुन-फऊल-फेलुन-
 फऊल-फेलुन:-
 “सफर की ख्वाहिश है दिल में लेकिन न कोई
 मंजिल न रासता है।”
 सफर की ख्वाहिश है दिल में लेकिन न कोई मंजिल
 न रास्ता है
 (इ) बहरे मुताकारिब मजाहिफ सोला रुकनी:-
 फअल-फऊलुन-फअल-फऊलुन-फऊलुन-फअल-
 फऊलुन
 “हम-ने तो अपनी बात कही है तुम भी अपनी बिति
 कहो न”
 हमने तो अपनी बात कही है तुम भी अपनी बिति
 कहो न
 5- बहरे कामिल सालिम (मूजिद खलील बिन
 अहमद):-
 मुतफायलुन-मुतफायलुन-मुतफायलुन-मुतफायलुन-
 “न रुके न देखा न बात की मिरे सामने से गुजर
 गये”
 न रुके न देखा न बात की मिरे सामने से गुजर गये
 6- बहरे वाफर सालिम (मूजिद खलील बिन
 अहमद):-
 मुफायलतुन-मुफायलतुन-मुफायलतुन-
 मुफायलतुन:-
 “हवायें चलीं-घटायें उठीं- फजां से घुला-नशाही
 नशा”
 हवाये चलीं घटायें फजां से घुला नशाही नशा
 (7) (मुजिद अब्दुल हसन अख्फश):-
 फायलुन-फायलुन-फायलुन-फायलुन:-
 “शम्मा रौ-शन तो-है रौशनी क्या हुई”
 शम्मा रौशन तो है रौशनी क्या हुई

महजूफ बहारें

(अ) बहरें मुतदारिक मज़ज़ल:-

फाइलान-फाइलुन- फाइलान-फाइलुन:-

“तेरी याद आज भी -दिल के आस-पास है”

तेरी याद आज भी दिल के आस-पास है

(ब) बहरे मुतदारिक मुसम्मन मजनून :-

फयेलुन- फयेलुन- फयेलुन- फयेलुन

“मेरा क्या है यहाँ मैं रहा न रहा”

मेरा क्या है यहाँ मैं रहा न रहा

(स) बहरे मुल्दारिक मुसम्मन मजनून सोला रुकनी:-

फयेलुन-फयेलुन-फयेलुन-फयेलुन- फयेलुन-

फयेलुन-फयेलुन- फयेलुन:-

“रुके हम-न रुके हैं-हमारे कदम जो सफर में रहे हैं चलते रहे हैं”

रुके हम न रुके हैं हमारे कदम जो सफर में रहे हैं तो चलते रहे हैं

(द) बहरे मतुदारिक मुसम्मन मम्तूअ सोला रुकनी:-

फेलुन-फेलुन-फेलुन-फेलुन:-

“क्या-रिश्ता है तेरा मेरा”

क्या रिश्ता तेरा मेरा

(इ) बहरे मतुदारिक मुसम्मन मम्तूअ सोला रुकनी:-

फेलुन-फेलुन-फेलुन-फेलुन-फेलुन-फेलुन-फेलुन:-

“जब से देखी तेरी सूरत कब चैन आया है इस दिल को

(फ) बहरे मतुदारिक मुसम्मन महजूफ:-

फायलुन-फायलुन-फायलुन

“मुझे को मे-रा पता तो बता दो”

मुझे को मेरा पता तो बता दो

8. बहरे मुन्सरेह सालिम (मूजिद खलील बिन

अहमद)

मुस्तफऐलुन- मफऊलात-मुस्तफऐलुन- मफऊलात-

“मैंने कहा-अपना हाल-दिल ने कही-अपनी बात”

मैंने कहा अपना हाल दिल ने कही अपनी बात

(अ) बहरे मुन्सरेह मतवी मक्सूर:-

मुफ्तऐलुन-फायलुन-मुफ्तऐलुन-फायलुन:-

“तुम जो मिले-मिल गई-मुझ को खुशी ईद की”

(ब) बहरे मुन्सरेह मतवी मक्सूर मनहूर मजदूअ:-

मुफ्तऐलुन-फायलुन-मुफ्तऐलुन -फा:-

“भीड़ में खो-जाएगा तू न उदार जा”

भीड़ में खो, जाएगा तू न उदार जा

(द) बहरे मुन्सरेह मुसद्दह मतबी:-

मुफ्तऐलुन-फाइलात-मुफ्तऐलुन:-

“उसकी नज़र-से मिली है-मेरी नज़र”

उसकी नज़र से मिली है नज़र

(इ) बहरे मुन्सरेह मुसद्दस मतबी मम्तूअ:-

मुफ्तऐलुन-फाइलात -मफऊलुन:-

“दिल की लगी - इम्तितान लेती है”

दिल की लगी इम्तितान लेती है

9.बहरे मुजारेअ सालिम (मूजिद खलील बिन अहमद):-

मफाईलुन- फारालातुन -मफाईलुन- फायलातुन:-

“छुपा है क्या तेरे दिल में तेरा चेहरा बोलता है”

छुपा है क्या तेरे दिल में तेरा चेहरा बोलता है

(अ) बहरे मुजारेअ मुसम्मन अखरब :-

मफऊल- फायलातुन- मफअल- फायलातुन:-

“इन्तजाम दे रहे हैं-वो भी मेरी वफा को”

इन्तजाम दे रहे हैं वो भी मेरी वफा को

(ब) बहरे मुजारेअमुसम्मन अखरब मखफूफ मक्सूर:-

मफिल-फाईलात-मफाईल-फाइलात:-
 “वो फूल है तमाम-निगाहों का इन्तिखाव”
 वो फूल है तमाम निगाहों का इन्तिखाव
 (स) बहरे मुजारेअमुसम्मन मखफूफ महजूफ:-
 मफऊल-फाईलात-मफाईल-फाईलुन:-
 “होशो खरिद की भीड़ में इन्सान खा गया”
 होशो खरिद की भीड़ में इन्सान खा गया
 (द) बहरे मुजारे मखफूफ मक्सूर:-
 मफाईल-फाईलान-मफाईल-फाईलान:-
 “तिरा हुस्न बेमिसाल-मिरा इश्क लाजवाब”
 तिरा हुस्न बेमिसाल मिरा इश्क लाजवाब
 (इ) बहरे मुजारे मुसद्दस अखरब:-
 मफइल-फाईलान-मफाईल-फायलातुन:-
 “तू बात-मेरी मान-मेरे हमदम”
 तू बात मेरी मन मेरे हमदम
 (फ) बहरे मुजारेअमुसद्दस अखरब मम्सूर:-
 मफइल-फाईलान-मफाईलुन:-
 “वो शख्स-बदगुमां-हुआ होगा”
 वो शख्स बदगुमां हुआ होगा
 10. बहर बनाने वाले का नाम:
 बहरे सरीअसालिम (मूजिद खलील बिन अहमद):-
 मुस्तऐलुन-मुस्तऐलुन-मफऊलात:-
 “जाती नहीं-दिल से मिरे-तेरी याद”
 जाती नहीं दिल से मिरे तेरी याद
 (अ) बहरे सरीअमुद्दस मतबी मौकूफ:-
 मुफ्तऐलुन-मुफ्तऐलुन-फाइलान:-
 “हमने लिखी-एक ग़ज़ल-उसके नाम”
 हमने लिखी एक ग़ज़ल उसके नाम

(ब) बहरे सरीअमुसद्दस मतबी मखफूफ:-
 मुफ्तऐलुन-मुफ्तऐलुन-फाइलुन:-
 “मौसमे गुल-फिर मुझे तड़-पा गया”
 मौसमे गुल फिर मुझे तड़पा गया
 (स) बहरे सरीअ मुसद्दस मतबी मक्तूमजदूअ
 मुफ्तऐलुन - मफऊलुन- फाअ:-
 “दिल की लगी पर किसका-जोर”
 दिल की लगी पर किसका जोर
 (द) बहरे सरीअमतबी मम्तूझ मनहूर:-
 मुस्तफऐलुन-मफ ऊलुन-फाअ:-
 “तुम न मुझे-पहचानो गे”
 तुम न मुझे पहचानोगे
 (इ) बहरे सरीअ मुसद्दस मजनून मम्सूफ:-
 मुस्तफऐलुन-मुस्तफऐलुन-मफऊलुन:-
 “तदबीर का तकदीर से रिश्ता है”
 तदबीर का तकदीर से रिश्ता है
 11. बहर बनाने वाले का नाम:
 बहरे खफीफ सालिम (मूजिद खलील बिन अहमद):-
 फायालालुन-मुस्तफऐलुन- फायलुन:-
 “आपकी ये दीवानगी खूब है”
 आपकी ये दीवानगी खूब है
 (अ) बहरे खफीफ मुसद्दस मजनून:-
 फायालातुन-मफाईलुन-फायेलातुन:-
 “तुम गये तो -सकूने दिल -न रहेगा”
 तुम गये तो सकूने दिल न रहेगा
 (ब) बहरे खफीफ मुसद्दस मशअस मम्सूर:-
 फायालातुन-मफाईलुन-फायेलान:-
 “जिसको देती है जिन्दगी -आवाज”

जिसको देती है जिन्दगी आवाज़

12. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे मुजतस सलिम (मूजिद खलील बिन अहमद):-
मुस्तफ़ऐलुन- फ़ायालातुन-मुस्तफ़ऐलुन-
फ़ायालातुन:-

“जिस राह पर चल रहे हो उस राह में गम मिलेगा”

जिस राह पर चल रहे हो उस राह में गम मिलेगा

(अ) बहरे मुजतस मुसम्मन मजनून:-

मफ़ाईलू-फ़येलातुन-मफ़ाईलुन-फ़येलातुन:-
न दोस्तों-से शिकायत-न दुश्मनों से गिला है।”

न दोस्तों से शिकायत न दुश्मनों से गिला है

(ब) बहरे मुजतस मसनून मकसूर:-

मफ़ाईलुन-फ़येलातुन-मफ़ाईलुन-फ़येलातुन:-

“महकती जुलफ़ ने चूमें तिरे लबों के गुलाब”

महकती जुलफ़ ने चूमें तिरे लबों के गुलाब

13. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे मुक्तजब सालिम (मूजिद खलील बिन अहमद):-

मफ़इलात- मुस्तफ़ऐलुन-मफ़ऊलात- मुस्तफ़ऐलुन:-

“जब भी शेर कहता हूँ मैं तेरी बात-करता हूँ मैं”

जब भी शेर कहता हूँ मैं तेरी बात करता हूँ मैं

(अ) बहरे मुक्तजब मुसम्मन मतवी:-

फ़ाइलात-मुफ़्तऐलुन-फ़ाइलात-मुफ़्तऐलुन:-

“हमने प्यार तुम से किया बेकरार तुमने किया”

हमने प्यार तुम से किया बेकरार तुमने किया

(ब) बहरे मुक्तजब मुसम्मन मतवी मकतूज़:-

फ़ाइलात-मकऊलुन फ़ाइलात मफ़ऊलुब:-

“जिन्दगी के दामन में फूल भी हैं- कांटे भी”

जिन्दगी के दामन में फूल भी हैं कांटे भी

14. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे तवील (मूजिद खलील बिन अहमद):-

(ये बहर अरबी में प्रचलित है।)

फऊलुन-मफ़ाईलुन-फऊलुन मफ़ाईलुन:-

“तुम्हारी निगाह में मुहब्बत तमाशा है”

तुम्हारी निगाह में मुहब्बत तमाशा है

15. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे मुदीद (मूजिद खलील बिन अहमद):-

(अरबी में प्रचलित है)

फाइलातुन-फायलुन -फाइलातुन फाईलुन:-

“आईना मह-फूज़ है- पत्थरों के शहर में”

आईना महफूज़ है पत्थरों के शहर में

16. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे बसीत (मूजिद खलील बिन अहमद):-

(ये अरबी में प्रचलित है।)

मुस्तफ़ऐलुन-फायलुन-मुस्तफ़ऐलुन-फायलुन:-

“मैंने तुम्हें पा लिया फिर क्या मुझे चाहिये”

मैंने तुम्हें पा लिया फिर क्या मुझे चाहिये”

17. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे बसीत (मूजिद खलील बिन अहमद)

(ये फारसी में प्रचलित है।)

फायलाहुन-फायलाहुन मुस्तफ़ऐलुन:-

“तुम नहीं तो बेसदा है ये साजे दिल”

तुम नहीं तो बेसदा है ये साजे दिल

18. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे करीब सालिम (मूजिद युसूफ़ नेशापुरी):-

मफ़ाईलुन-मफ़ाईलुन-फायलातुन:-

“महुब्बत कम-मुख्त कम उस नजर में

(अ) बहरे करीब मख्कूफ मकसूद:-

मफाईल-मफाईल-फायलातुन:-

“कहो यार सुनो यार दिल की बातें”

(ब) बहरे करीब मख्कूफ मकसूद:-

मफाईल-मफाईल-फाईलाल:-

“कहो यार-सुनो यार की बात

को यार सुनो यार की बात

(स) बहरे करीब मख्कूफ महजूफ:-

मफाईल-मफाईल-फाइलुन:-

“तेरी जीत मेरी हार हो गई”

तेरी जीत मेरी हार हो गई

19. बहर बनाने वाले का नाम:

बहरे मशाकिल सालिम (कोई ना मालूम शख्स):-

(ये फारसी में प्रचलित है)

फायलातुन-मफाईलुन मफाईलुन:-

“बोझ गम का -मिरे दिल को उठाना है”

बोझ गम का मिरे दिल को उठाना है

(अ) बहरे मशाकिल मख्कूफ मकसूर:-

फाएलात-मुफाईल-मुफाईल:-

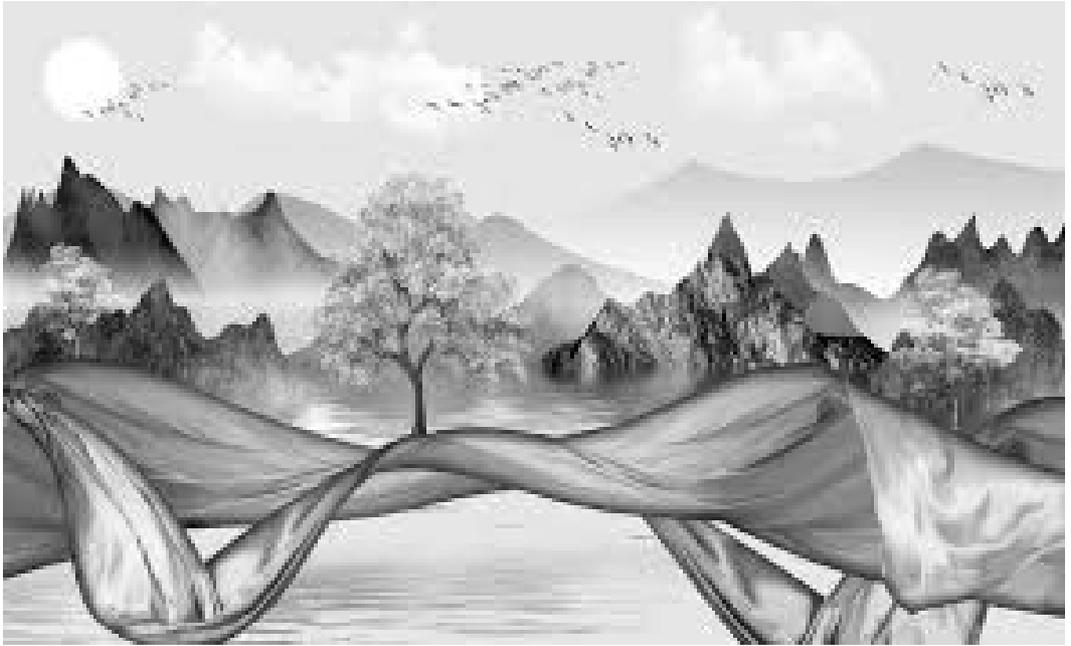
“इन्तिजार-मुझे है किसी का”

इन्तिजार मुझे है किसी का

-नसीम रिफअत

ग्वालियर, मध्य प्रदेश

पुस्तक समीक्षा: कदम सोच के रखें, “दूरास्त
पर्वतानि रम्यते।”





ग़ज़ल का सिर, पैर और पूँछ

लगभग सभी हिन्दी भाषी जो कविता में रुचि रखते हैं, हिन्दी संगीत में रुचि रखते हैं, किसी न किसी रूप में ग़ज़ल में भी रुचि रखते हैं। जो लोग उर्दू-दाँ नहीं भी हैं और महदी हसन, गुलाम अली की गाई कुछ पेचीदा ग़ज़लें नहीं भी समझ पाते, उनके लिए पंकज उदास अवतार सरीखे आए। उन्होंने सरल ग़ज़लों को सरल धुनों में गाया और ग़ज़ल भारत में जन-जन की चहेती हो गई। फिर अपने जगजीत सिंह तो हैं ही ग़ज़लों के बादशाह- कौन होगा जिसके म्यूजिक कलेक्शन में जगजीत सिंह के सीडी-कसेट नहीं होंगे।

ग़ज़ल क्या है?

चलिए बात करते हैं कि ग़ज़ल क्या है। ग़ज़ल शेरों का एक समूह है जिसके शुरू में मतला होता है, आखिर में मकता होता है, मकते में अक्सर शायर का तखल्लुस होता है। पूरी ग़ज़ल में एक सा बहर होता है। काफिया जरूर होता है, रदीफ हो या न हो। यानी ग़ज़ल हमरदीफ भी हो सकती है और ग़ैरमुदर्रफ भी।

एक मिनट! एक मिनट कुछ ज्यादा उर्दू हो गई, है न? चलिए इसको जरा आसान बनाते हैं एक मिसाल की मदद से। नासिर काजमी की इस सीधी-सादी ग़ज़ल को लीजिए (ग़ज़ल यहाँ सुन सकते हैं)।

दिल धड़कने का सबब याद आया

वो तेरी याद थी अब याद आया
आज मुश्किल था सम्भलना ऐ दोस्त
तू मुसीबत में अजब याद आया
हाल-ए-दिल हम भी सुनाते लेकिन
जब वो रुखसत हुए तब याद आया
बैठ कर साया-ए-गुल में 'नासिर'
हम बहुत रोये वो जब याद आया

Rhyming sequence पर ध्यान दें AA-BA-CA-DA

शेर ग़ज़ल का हर शेर अपने आप में दो पंक्तियों की पूरी कविता होती है। यानी हर शेर को अलग से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रायः ग़ज़ल में एक कहानी या कविता सा लगातार प्रवाह भी नहीं होता। यानी आप अशं आर (शेरों) को ऊपर नीचे भी कर सकते हैं और उन की संख्या को घटा बढ़ा भी सकते हैं। हर शेर की पहली पंक्ति को सुनाना, दोहराना, दूसरी लाइन का सस्पेन्स बिल्ड करना, फिर दूसरी लाइन पर वाहवाही लूटना एक अच्छे शायर का हुनर है, और कई चुटकुलों की पृष्ठभूमि भी।

मतला- ग़ज़ल के पहले शेर को मतला कहते हैं। इसकी दोनों पंक्तियों का समान अन्त होता है (तुकबन्दी)। यही अन्त बाकी सभी शेरों की दूसरी लाइन का होता है। ग़ज़ल के मतले से ही उस के

बहर रदीफ और काफिए का पता चलता है।

बहर-हर पंक्ति की लंबाई एक सी होती है और इस लंबाई को बहर कहते हैं। ग़ज़ल ऊपर लिखी ग़ज़ल की तरह मध्यम बहर की हो सकती, या फिर “अपनी धुन में रहता हूँ/ मैं भी तेरे जैसा हूँ” की तरह छोटे बहर की, या ऐ मेरे हमनशीं चल कहीं और चल इस चमन में अब अपना गुजारा नहीं/बात होती गुलों की तो सह लेते हम अब तो काँटो पे भी हक हमारा नहीं की तरह लम्बे बहर की।

रदीफ- हर शेर के अन्त में आने वाले समान शब्द/शब्दों को रदीफ कहते हैं। ऊपर लिखी ग़ज़ल में रदीफ है “याद आया”। एक से रदीफ वाली ग़ज़लें हमरदीफ कहलाती हैं। कुछ ग़ज़लें बिना रदीफ की होती हैं, यानी गैर-मुदर्रफ, जैसे “दैरो हरम में बसने वालों/ मैखानों में फूट न डालो।”

काफिया- रदीफ से पहले आने वाले मिलते जुलते शब्द को कहते हैं। इस ग़ज़ल का काफिया है अब, अजब, तब, आदि।

मकता-ग़ज़ल के आखिरी शेर को मकता कहते हैं। इसमें अक्सर शायर का तखल्लुस यानी उपनाम बताया जाता है। जैसे ऊपर की ग़ज़ल में “नासिर” या अपने रवि भाई की ग़ज़लों में “रवि”। आजकल कई ग़ज़लें बिना मकते के भी लिखी जाती हैं।

ग़ज़ल और गैर ग़ज़ल की पहचान

ग़ज़ल क्या है, यह समझने के साथ यह समझना भी जरूरी है कि ग़ज़ल क्या नहीं है। कई बार हम मशहूर ग़ज़ल गायकों की गाई हर नज़्म को समझते हैं। दरअसल जगजीत सिंह, महदी हसन, गुलाम अली का गाया हर गीत, नज़्म, गाना, ग़ज़ल नहीं होता। यदि गीत में ऊपर दिया Rhyming sequence

(AA-BA-CA-DA) और शेरों का समूह न हो तो उसे ग़ज़ल नहीं कहा जा सकता। जैसे कि लिखे गए गीत, जिन्हें आम तौर पर ग़ज़ल समझा जाता है, वास्तव में ग़ज़लें नहीं हैं।

बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी
लोग जालिम हैं हर इक बात का ताना देंगे
बातों बातों में तेरा जिक्र भी लें आएँगे

आज जाने की जिद ना करो

मेरे पहलू में बैठे रहो

तुम ही सोचो जरा क्यों न रोकेँ तुम्हें

जान जाती है जब उठके जाते हो तुम

चंद रोज और मेरी जान फकत चंद ही रोज

जुल्म की छाँव में दम लेने पे मजबूर हैं हम

और कुछ और सितम सह ले तड़प लें रों लें

इसके विपरीत कई फिल्मी गैर-फिल्मी गाने जिन्हें कुछ लोग शायद ग़ज़लें न समझते हों, वास्तव में ग़ज़लें हैं। जैसे...

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलसिताँ हमारा

इन आँखों की मस्ती के मस्ताने हजारों हैं

इन आँखों से वाबस्ता अफसाने हजारों हैं

निगाहें मिलाने को जी चाहता है

दिलों-जाँ लुटाने को जी चाहता है

यह तो हुई ग़ज़ल के सिर-पैर की बात, पर इस पोस्ट के शीर्षक में पूँछ का क्या जिक्र है? बताते हैं। अपने करीयर की शुरुआत में हम और हमारे मित्रगण जिस कंपनी में थे, काम कम करते थे और ग़ज़लें ज्यादा बाँचते थे। अब शायरी तो आती नहीं थी, सो ग़ज़लों की पूँछ बना दिया करते थे। यानी बहर, रदीफ और काफिया तो था ही, उसको लेकर थोड़ी तुकबन्दी की

और बेकार से एक दो और शेर जोड़ दिए।
जैसे “अब” “अजब” “तब” के साथ “रब” पर
कुछ सोचा जाए-

कुफ़ छूटा यूँ सितम ढाए तूने
इस क्रंदर गुजरी कि रब याद आया।
या फिर “कब” पर
ता हयात भूलता रहा तू मुझे
याद आया भी तो कब याद आया।

ग़ज़ल इतनी लोकप्रिय हो गई है कि अब हर भाषा में
ग़ज़लें लिखी जाने लगी हैं। हिन्दी में तो पहले ही
लिखी जाती थी, मराठी, गुजराती, नेपाली, यहाँ तक
कि अँग्रेजी में भी ग़ज़ल लिखी जाती है।

चलते चलते एक बात और ग़ज़ल मूल रूप से अरबी
भाषा का शब्द है और अरबी में इसका अर्थ है स्त्रियों
से बतियाना।





ग़ज़ल की बारीकियाँ

ग़ज़ल में शब्द के सही तौल, वज़न और उच्चारण की भाँति काफिया और रदीफ का महत्व भी अत्यधिक है। काफिया के तुक (अन्त्यानुप्रास) और उसके बाद आने वाले शब्द या शब्दों को रदीफ कहते हैं। काफिया बदलता है किन्तु रदीफ नहीं बदलती है। उसका रूप जस का तस रहता है।

जितने गिले हैं सारे मुँह से निकाल डालो

रखो न दिल में प्यारे मुँह से निकाल डालो। -बहादुर शाह जफर

इस मतले में 'सारे' और 'प्यारे' काफिया है और 'मुँह से निकाल डालो' रदीफ है। यहाँ यह बतलाना उचित है कि ग़ज़ल के प्रारंभिक शेर को मतला और अंतिम शेर को मकता कहते हैं। मतला के दोनों मिसरों में तुक एक जैसी आती है और मकता में कवि का नाम या उपनाम रहता है। मतला का अर्थ है उदय और मकता का अर्थ है अस्त। उर्दू ग़ज़ल के नियमानुसार ग़ज़ल में मतला और मकता का होना अनिवार्य है वरना ग़ज़ल अधूरी मानी जाती है। लेकिन आज-कल ग़ज़लकार मकता के परम्परागत नियम को नहीं मानते हैं और इसके बिना ही ग़ज़ल कहते हैं। कुछ कवि मतला के बगैर भी ग़ज़ल लिखते हैं लेकिन बात नहीं बनती है क्योंकि ग़ज़ल में मकता हो या न हो, मतला का होना लाज़मी है जैसे गीत में मुखड़ा। गायक को तो सुर बाँधने के लिए गीत के मुखड़े की

भाँति मतला की आवश्यकता पड़ती ही है। ग़ज़ल में दो मतले हों तो दूसरे मतले को 'हुस्मेमतला' कहा जाता है। शेर का पहला मिसरा 'ऊला' दूसरा मिसरा 'सानी' कहलाता है। दो काफिए वाले शेर 'जू काफिया' कहते हैं।

शेर में काफिया का सही निर्वाह करने के लिए उससे सम्बद्ध कुछ मोटे-मोटे नियम हैं जिनको जानना या समझना कवि के लिए अत्यावश्यक है दो मिसरों से मतला बनता है जैसे दो पंक्तियों से दोहा मतला के दोनों मिसरों में एक जैसा काफिया यानि तुक का इस्तेमाल किया जाता है मतला के पहले मिसरा में यदि "सजाता" काफिया है तो मतले के दूसरे मिसरा में "लूभाता", "जगाता" या "उठाता" काफिया इस्तेमाल होता है ग़ज़ल के अन्य शेर "बुलाता", "लहराता" आदि काफियों पर ही चलेंगे। मतला में "आता", "जाता" "पाता" "खाता", "मुस्काता", "लहराता" आदि काफिये भी इस्तेमाल हो सकते हैं लेकिन ये बहर या छंद पर निर्भर है, निम्नलिखित बहर में की ग़ज़ल में "आता" "जाता" "मुस्काता" आदि काफिये तो इस्तेमाल हो सकते हैं लेकिन "मुस्काता", "लहराता" आदि काफिये नहीं

हम कहाँ उनको याद आते हैं

भूलने वाले भूल जाते हैं

मुस्कराहट हमारी देखते हो
लोग सच का गला दबाते हैं- प्राण शर्मा
उर्दू शायरी में एक छुट है वो ये कि मतला के पहले
मिसरा में “आता” दूसरे में “लाया” काफियों का
इस्तेमाल किया जा सकता है मसलन
वो यूँ बाहर जाता है
गोया घर का सताया है
लेकिन एक बंदिश भी है जिसका मैंने ऊपर उल्लेख
किया है कि मतला के पहले मिसरा में “आता” और
दूसरे मिसरा में “जाता” काफिये प्रयुक्त हुए हैं तो
पूरी गज़ल में समान ध्वनियों के शाब्द-खाता, भाता,
लाता आते हैं इस हालत में “आता” के साथ
“लाया” काफिया बाँधना गलत है इसके अतिरिक्त
धरानी या स्वर भिन्नता के कारण “कहा” के साथ
“वहाँ” “ठाठ” के साथ “गाँठ” “जोर” के साथ
“तौर” काफिये इस्तेमाल करना दोषपूर्ण है।
अभिव्यक्ति की अपूर्णता, अस्वाभाविकता, छंद-
अनभिज्ञता और शब्दों के गलत वर्णों के दोषों की
भांति हिन्दी की कुछेक गज़लों के काफियों और
रदीफों के अशुद्ध प्रयोग भी मिलते हैं जैसे-
आदमी की भीड़ में तनहा खड़ा है आदमी आज
बंजारा बना फिरता यहाँ है आदमी-राधे श्याम
रोधे श्याम के शेर का दूसरा मिसरा “यहाँ”
अनुनासिक होने के कारण अनुपयुक्त है
खुद से रूठे हैं हम लोग
जिनकी मूठें हैं हम लोग-शेर जंग गर्ग
दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है
खो जाए तो मिट्टी है मिल जाए तो सोना है- निदा
फाजली
इस शेर में “खिलौना” और “सोना” में आयी
“औ” और “औ” की धरानी में अन्तर है

बंद जीवन युगों में टूटा है
बाँध को टूटना था टूटा है - त्रिलोचन
अपने दिल में हि रख प्यारे तू सच का खाता सब के
सब बेशर्म यहाँ पर कोई शर्म नहीं खाता-भवानी
शंकर
फिक्र कुछ इसकी कीजिये यारो
आदमी किस तरह जिए यारो-
आदमी किस तरह जिए यारो -विद्या सागर शर्मा
उपर्युक्त तीनों शेरों में “टुटा”, “खाता” और
“जिए” की पुनरावृत्ति का दोष है एक मतला है
जिंदगी तुझ से मिमटना मेरी मजबूरी थी
अज़ल से भी तो लिपटना मेरी मजबूरी थी- कैलाश
गुरु “स्वामी”
“सिमटना” और “लिपटना” में आए “मटना”
और “पटना” काफिये हैं आगे के शेरों में भी इनकी
ध्वनियों -कटना, पलटना जैसे काफिये आने चाहिए
थे लेकिन कैलाश गुरु “स्वामी” के अन्य शेर में
“जलना” का गलत इस्तेमाल किया गया है पढिये-
ये अलग बात तू शर्मिंदगी से डूब गया
मैं इक चिराग था जलना मेरी मजबूरी थी
काफिया तो शुरू से ही हिंदी काव्य का अंग रहा है।
रदीफ भारतेंदु युग के आस-पास प्रयोग में आने लगी
थी। हिंदी के किस कवि ने इसका प्रयोग सबसे पहले
किया था, इसके बारे में कहना कठिन है। वस्तुतः वह
फारसी से उर्दू और उर्दू से हिंदी में आया। इसकी
खूबसूरती से भारतेंदू हरिश्चंद्र, दीन दयाल जी,
नाथूराम शर्मा शंकर, अयोध्या सिंह उपाध्याय,
मैथलीशरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’,
हरिवंशराय बच्चन आदि कवि इसकी ओर आकर्षित
हुए बिना नहीं रह सके। फलस्वरूप उन्होंने इसका
प्रयोग करके हिंदी काव्य सौंदर्य में वृद्धि की। उर्दू

शायरी के मिज़ाज़ को अच्छी तरह समझनेवाले हिंदी कवियों में राम नरेश त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। उर्दू की मशहूर बहर् 'मफ़ऊल फ़ाइलातुन मफ़ऊल फ़ाइलातुन (सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा) में बड़ी सुंदरता से प्रयोग की गई है। उनकी "स्वदेश गीत" और "अन्वेषण" कविताओं में 'में' की छोटी रदीफ की छवि दर्शनीय है-

जब तक रहे फड़कती नस एक भी बदन में
हो रक्त बूँद भर भी जब तक हमारे तन में
मैं ढूँढता तुझे था जब कुंज और वन में
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में

यहाँ पर यह बतलाना आवश्यक है कि रदीफ की खूबसूरती उसक चंद शब्दों में निहित है शब्दों की लंबी रदीफ काफिया की प्रभावोत्पादकता में बाधक तो बनती ही है, साथ ही शेर की सादगी पर बोझ हो जाती है। इसके अलावा गज़ल में रदीफ के रूप को बदलना बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई फूलदान में असली गुलाब की कली के साथ कागज़ की कली रख दे। गिरजानंद 'आकुल' का मतला है इतना चले हैं वो तेज़ सुध-बुध बिसार कर आए हैं लौट-लौट के अपने ही द्वार पर यहाँ 'बिसार और 'द्वार' काफिए हैं उनकी रदीफ है- 'कर'। चूँकि रदीफ बदलती नहीं इसलिए अंतिम शेर तक 'कर' का ही रूप बना रहना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। गज़लकार ने काफिया के साथ-साथ 'कर' रदीफ को दूसरे मिसरे में 'पर' में बदल दिया है।

दुष्यंत कुमार का मतला है-

मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आएंगे

मेरे बाद तुम्हें ये मेरी दिलाने आएंगे

यहां 'पाने' और 'दिलाने' काफिए, है; और उनकी रदीफ है- 'आएंगे'। गज़ल के अन्य शेर में 'आएंगे' के स्थान पर 'जाएंगे' रदीफ का स्तेमाल करना सरासर ग़लत है। पढ़िए-

हम क्या बोलें इस आँधी में कई घरोंदे टूट गए।

इन असफल निर्मितियों के शव कल पहचाने जाएंगे।

कई अशआर में रदीफ के ऐसे ही प्रयोग मिलते हैं।





गज़ल में शब्द ...

गज़ल क्या है, अरुज क्या है ये सब बाद में पहले हम “शब्द” पर चर्चा करेंगे कि शब्द क्या है? शब्द एक ध्वनि है, एक आवाज़ है, शब्द का अपना एक आकार होता है, जब हम उसे लिखते हैं, लेकिन जब हम बोलते हैं वो एक ध्वनि में बदल जाता है, तो शब्द का आकार भी है और शब्द निराकार भी है और इसी लिए शब्द को परमात्मा भी कहा गया जो निराकार भी है और हर आकार भी उसका है तो शब्द साकार भी है और निराकार भी हमारा सारा काव्य शब्द से बना है और शब्द से जो ध्वनि पैदा होती है उस से बना है संगीत अतः हम यह कह सकते हैं कि काव्य से संगीत और संगीत से काव्य पैदा हुआ, दोनों एक दुसरे के पूरक हैं काव्य के बिना संगीत और संगीत के बिना काव्य के कल्पना नहीं कर सकते, और हम काव्य को ऐसे भी परिभाषित कर सकते हैं कि वो शब्द जिन्हें हम संगीत में ढाल सकें वो काव्य है तो गज़ल को भी हम ऐसे ही परिभाषित कर सकते हैं कि काव्य की वो विधा जिसे हम संगीत में ढाल सकते हैं वो गज़ल है गज़ल का शाब्दिक अर्थ चाहे कुछ भी हो अन्य विधाओं कि तरह ये भी काव्य की एक विधा है हमारा सारा काव्य, हमारे मंत्र, हमारे वेद सब लयबद्ध है सबका आधार छंद है अब संगीत तो सात सुरों पर टिका है लेकिन शब्द या काव्य का क्या आधार है? इसी प्रश्न का उत्तर हम खोजेंगे.

हिन्दी काव्य शास्त्र का आधार तो पिंगल या छंद शास्त्र है लेकिन गज़ल क्योंकि सबसे पहले फारसी में कही गई इसलिए इसका छंद शास्त्र को इल्मे-अरुज कहते हैं एक बात आप पल्ले बाँध लें कि बिना बहर के गज़ल आज्ञछ नज़्म होती है गज़ल कतई नहीं और आजाद नज़्म का काव्य में काव्य में कोई वजूद नहीं है, हम शुरु करते हैं वज़्म से, सबसे पहले हमें शब्द का वज़्म करना आना चाहिए. उसके लिए हम पहले शब्द को तोड़ेंगे, हम शब्द को उस अधार पर तोड़ेंगे जिस आधार पर हम उसका उच्चारण करते हैं, शब्द की सबसे छोटी इकाई होती है वर्ण तो शब्दों को हम वर्णों में तोड़ेंगे वर्ण वह ध्वनि हैं जो किसी शब्द को बोलने में एक समय में हमारे मुँह से निकलती है और ध्वनियाँ केवल दो ही तरह की होती हैं या तो लघु (छोटी) या दीर्घ (बड़ी) अब हम कुछ शब्दों को तोड़कर देखते हैं और समझते हैं, जैसे:

“आकाश”

ये तीन वर्णों से मिलकर बना है.

आ +का+श.

आ: ये एक बड़ी आवाज़ है.

का: ये एक बड़ी आवाज़ है

श: ये एक छोटी आवाज़ है.

और नज़र (न+जर)

नः ये एक छोटी आवाज है

जरः ये एक बड़ी आवाज है.

छंद शास्त्र में इन लंबी आवाजों को गुरु और छोटी आवाजों को लघु कहते हैं और लंबी आवाज के लिए “एस” और छोटी आवाज के लिए “।” का इस्तेमाल करते हैं इन्हीं आवाजों के समूह से हिंदी में गण बने, फारसी में लंबी आवाज या गुरु को मुतहर्रिक और छोटी या लघु को सकिन कहते हैं इसी आधार पर हिंदी में गण बने और इसी आधार पर फारसी में अरकान बने यहाँ हम लघु और गुरु को दर्शाने के लिए 1 और 2 का इस्तेमाल करेंगे जैसे:

सितारों के आगे जहाँ और भी हैं.

पहले इसे वर्णों में तोड़ेगे. यहाँ उसी अधार पर इन्हें गया जैसे उच्चारण किया जाता है.

सि+ता+रों के आ+गे+ज+हाँ औ+र भी हैं.

(1+2+21+2+21+2+2+1+2)

अब हम इस एक-दो के समूहों को अगर ऐसे लिखें.

1 2 2 1 2 2 1 2 2 1 2 2

तो ये 1 2 2 क समुह एक रुक्न बन गया और रुक्न क बहुवचन अरकान होता है. इन्हीं अरकानों के आधार पर फारसी में बहरें बनीं और भाषाविदों ने सभी सम्भव नमूनों को लिखने के लिए अलग-अलग बहरों का इस्तेमाल किया और हर रुक्न का नाम रख दिया जैसे फाइलातुन अब इस फाइलातुन का कोई मतलब नहीं है यह एक निरर्थक शब्द है सिर्फ वज्ज को याद रखने के लिए इनके नाम रख गए. आप इस की जगह अपने शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं जैसे फाइलातुन की जगह “छमछमाछम” भी हो सकता है, इसका वज्ज (भार) इसका गुरु लघु की तरतीब.

ये आठ मूल अरकान हैं, जिनसे आगे चलकर बहरें

बनीं.

फा-इ-ला-तुन (2-1-2-2)

मु-त-फ़ा-इ-लुन (1-1-2-1-2)

मस-तफ-इ-लुन (2-2-1-2)

मु-फ़ा-ई-लुन (1-2-2-2)

मु-फ़ा-इ-ल-तुन (1-2-1-1-2)

मफ़-ऊ-ला-त (2-2-2-1)

फ़ा-इ-लुन (2-1-2)

फ़-ऊ-लुन (1-2-2)

अब भाषाविदों ने यहाँ कुछ छुट भी दी है आप गुरु वर्णों। को लघु में ले सकते हैं जैसे मेरा (22) को मिरा (12) के वज्ज में, तेरा (22) को तिरा (12) भी को भ, से को स इत्यादि. और आप बहर के लिहाज से कुछ शब्दों की मात्राएँ गिरा भी सकते हैं और हर मिसरे के अंत में एक लघु वज्ज में ज्यादा हो सकता है. अनुस्वर वर्णों को गुरु में गिना जाता है जैसे: बंद (21) छंद (21) और चंद्र बिंदु को तकतीअ में नहीं गिनते जैसे: चाँद (21) संयुक्त वर्ण से पहले लघु को गुरु में गिना जाता है जैसे:

सच्चाई (222)

अब फ़ारसी में 18 बहरों बनाई गई जो इस प्रकार है:

1. मुतकारिब (122²4) चार फ़ऊलुन
2. हज़ज (122²4) चार मुफ़ाईलुन
3. रमल (212²4) चार फ़ाइलातुन
4. रजज.: (2212) चार मसतफ़इलुन
5. कामिल: (11212²4) चार मुतफ़ाइलुन
6. बसीत: (2212, 212, 2212, 212) मसतलुन फ़ाइलुर्न²
7. तवील: (122, 1222, 122, 122) फ़ऊलुन

मुफाईलुर्ने 2

8. मुशाकिलः (2122, 1222, 1222)
फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन

9. मदीद : (2122, 212, 2122, 212)
फ़ाइलातुन फाइलुर्ने 2

10. मजतसः (2212, 2122, 2212, 2122)
मसतफ़इलुन फाइलुर्ने 2

11. मजारेः (1222, 2122, 1222, 2122)
मुफ़ाइलुन फ़ाइलातुन 2 सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में

12. मुंसरेह : (221, 2221, 2212, 2221)
मसतफ़इलुन मफ़ऊलातर्ने 2 सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में.

13. वाफ़िर : (12112^{र्ने}4) मुफ़ाइलुर्ने 4 सिर्फ़
मुजाहिफ़ सूरत में.

14. करीब (1222 1222 2122) मुफ़ाइलुन
मुफ़ाइलुन फ़ाइलातुन सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में.

15. सरीअ (2212 2212 2221) मसतफ़इलुन
मफ़ऊलात सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में.

16. खफीफ़ः (2122 2212 2122) फ़ाइलातुन
फ़ाइलातुन मसफ़इलुन सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में.

18. मुक्रातजेब (2221 2212 2221 2212)
मफ़ऊलात मसतफ़इलुन 2 सिर्फ़ मुजाहिफ़ सूरत में

19. रुबाई

यहाँ पर रुककर थोड़ा गज़ल की बनावट के बारे में
भी समझ लेते हैं.

गज़ले के पहले शेर को मतला, अंतिम को मकता
जिसमें शायर अपना उपनाम लिखता है. एक गज़ल
में कई मतले हो सकते हैं और गज़ल बिना मतले के
भी हो सकती है गज़ल में कम से कम तीन शेर तो
होने ही चाहिए गज़ल का हर शेर अलग विषय पर
होता है एक विषय पर लिखी गज़ल को गज़ले-
मुसल्लसल कहते हैं. वह शब्द जो मतले में दो बार

रदीफ़ से पहले और हर शेर के दूसरे मिसरे मिसरे में
रदीफ़ से पहले आता है उसे काफ़िया कहते हैं. ये हर
शेर के दूसरे मिसरे में अंत में आते हैं, रदीफ़ कहलाते
हैं. ये मतले में क़फ़िए के बाद दो बार आती है. बहर
को जानने के लिए हम उसके साकिन और मुतहरिर्क
को अलग-अलग करते हैं और इसे तकतीअ करना
कहते हैं. बहर के इल्म को अरुज़ (छन्द शास्त्र) कहते
हैं और इसका इल्म रखने वाले को अरुज़ी (छन्द)
यहाँ पर एक बात याद आ गई द्विज जी अक्सर कहते
हैं कि ज्यादा अरुज़ी होने शायद शायर कम
आलोचक ज्यादा हो जाता है. बात भी सही है शायर
को ज्यादा अरुज़ी होने की जरूरत नहीं है उतना
काफी है जिससे गज़ल बिना दोष के लिखी जा सके
बाकी ये काम तो आलोचकों का ज्यादा है. यह तो
एक महासागर है अगर शायर इसमें डूब गया तो
काम गड़बड़ हो जाएगा.

अब एक गज़ल को उदाहरण के तौर पर लेते हैं और
तमाम बातों को फिर से समझने की कोशिश करते हैं
द्विज जी

की एक गज़ल है:

अँधेरे चंद लोगों का अगर मकसद नहीं होते
यहाँ के लोग अपने आप में सरहद नहीं होते
न भूलो, तुमने ये ऊँचाईयाँ भी हमसे छीनी हैं
हमारा क्रद नहीं लेते तो आदमक्रद नहीं होते
फ़रेबों की कहानी है तुम्हारे मापदण्डों में
वग़रना हर जगह बौने कभी अंगद नहीं होते
तुम्हारी यह इमारत रोक पाएगी हमें कब तक
वहाँ भी तो बसेरे हैं जहाँ गुम्बद नहीं होते
चले हैं घर से तो फिर धूप से भी जूझना होगा
सफ़र में हर जगह सुन्दर-घने बरगद नहीं होते.
अब इस गज़ल में पाँच अशआर हैं

यह शेर मतला (पहला शेर) है:
अँधेरे चन्द लोगों का अगर मकसद नहीं होते
यहाँ के लोग अपने आप में सरहद नहीं होते
मकसद, सरहद, बरगद इत्यादि ग़ज़ल के काफ़िए
है.

“नहीं होते” ग़ज़ल की रदीफ़ है

“मकसद नहीं होते” “सरहद नहीं होते” ये ग़ज़ल
की ज़मीन है.

चले हैं घर से तो फिर धूप से भी जूझना होगा
सफ़र में जगह सुन्दर-घने बरगद नहीं होते
ये ग़ज़ल का मक़ता (आख़िरी शेर) है.

और बहर का नाम है “हजज़”

वज़न है: 1222 4

अँधेरे चन्द लोगों का अगर मकसद नहीं होते
यहाँ पर अ के उपर चंद्र बिंदू है सो उसे लघु के वज़न
में लिया है, जैसा हमने उपर पढ़ा “न” हमेशा लघु
के वज़न में लिया जाता है.

न भूलो, तुमने ये ऊँचाईयाँ भी हमसे छीनी हैं

1222 1222 1222 1222

यहाँ पर ने को लघु के वज़न में लिया है. और हमसे को
हमस के वज़न में लिया है

हमारा कद नहीं लेते तो आदमकद नहीं होते
इस मिसरे में “तो” को लघु के वज़न में लिया है.

बहुत कुछ सीखने को है, ये इल्म तो एक सागर है.
आप उम्र भर सीखते हैं और शुरू में हमने चर्चा की
थी कि शब्द परमात्मा है तो परमात्मा को पाने के लिए
हम सब जानते हैं कि गुरु महत्व है गुरु के बिना ये
विधा सीखना मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं मैं ये
इसलिए कह रहा हूँ कि मिलना भी सबके नसीब में
नहीं होता लेकिन गुरु नहीं है तो हताश होकर

लिखना छोड़ छेना भी ग़लत है ये शायरी कोई गणित
नहीं है जो किसी को सिखाई जाए कोई भी इसे
सीखकर अगर कहे मैं शायर बन जाऊँगा तो वो धोखे
में है, ये तो एक तड़प है जो हर सीने में नहीं होती
बहरें अपने आप आ जाती हैं जब ख्याल बेचैन होता
है. निरंतर अभ्यास लाजिम है, यह नहीं कि आज
ग़ज़ल लिखो और सोचो कि कल हम शायर बन
जाएंगे तो ग़लत होगा. कितने कच्चे चिट्टे लिखे जाते
हैं फाड़े जाते हैं फिर जाकर कहीं माँ सरस्वती
मेहरबान होती हैं आप इस फाइलातुन से घबराए नहीं
बहरें बनने से पहले भी बहरें थी वो तो एक ताल है
जो शायर के अचेतन में सोई होती है. जब बहर का
पता नहीं था उस वक्त की ग़ज़लें निकाल कर देखता
हूँ तो इस बहर में है, कई शायर ऐसे भी हुए हैं जिन्हें
इस का इल्म कम था लेकिन उनकी सारी शायरी वज़न
में है जब ये बहरें सध जाती है तो सब आसान हो
जाता है बस दो चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं मशक
(अभ्यास) और सब्र (धैर्य)

- सतपाल ख्याल



आंबेडकरवादी चेतना की गज़लें

मानव में निहित संवेदना और चेतना ही औरों से उसे अलग स्थापित करती हैं संवेदनशीलता और संचेतना ही वह मानवीय कारक हैं जिनके कारण वह स्वयं के साथ-साथ अन्य मनुष्यों तथा सजीव-निर्जीव से अंतरसंबंध स्थापित कर पाता है, यद्यपि यह परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है, आदि मानवीय सामाजिक साहचर्य के फलस्वरूप मैत्री, प्रेम और करुणा आदि मानवीय गुणों का जन्म होता है, जिनका निरंतर विकास होता रहता है इनकी पृष्ठभूमि में व्यक्ति के प्रसन्नचित्तता की प्रस्थिति उत्प्रेरक का कार्य करती है जिसकी परिणति आनंद की अनुभूति है व्यक्ति आनंद प्राप्ति के अवसर और विधा में लग जाता है अनुभूति है व्यक्ति आनंद प्राप्ति के अवसर और विधा में लग जाता है जो निश्चित ही परिवेश की पृष्ठभूमि में संस्कार और व्यक्ति के विवेक पर आधारित होते हैं, हर कोई अपने अपने पसंद के वे क्रिया-कलाप में लग जाते हैं, जो उन्हें आनंदित करते हैं पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ से भी मनुष्य सुखों की अनुभूति करता है, जैसे कोई सुंदर दृश्य या सौन्दर्य बोध कराने वाली वस्तुओं, जीवों मनुष्यों से और कोई अच्छा सुन कर कोई अच्छा खा पीकर अथवा स्पर्श से हर्षित होता है मनुष्य की व्यक्तिगत हो अथवा सामूहिक पसंगी, तदनुरूप उनका कार्य क्षेत्र भी निर्धारित हो उसे पसंद है जिससे उसे आनंद की अनुभूति होती है और उन्हीं के प्रति वह निष्ठावान हो

जाता है, उन्हें ही अपना आदर्श, लक्ष्य मान लेता है। मनुष्य को आनंद की अनुभूति होती ही वे उन्हें हर्ष-क्रियाओं से प्रकट भी करता है, इन्हीं में से एक है लयात्मक ध्वनियों का उच्चारण और संभवतः जिससे गीत का अविष्कार हुआ होगा।

शिक्षा, ज्ञान, विवेक संस्कारों के मध्य अभ्यास की सतत प्रक्रिया से गुजरते हुए नव सृजन अनेक विधाओं के फलस्वरूप हुआ गज़लों में से एक कई बार सुंदरता का पर्याय ही निरूपित होती रही है गज़ल सहसा गज़ल गुणगुना कर प्रसन्नता व्यक्त करने का जरिया बनती गई।

रचनाकारों/ साहित्यकारों ने समय के साथ गज़ल के प्रतिमान गढ़े प्रेम, श्रंगार सुख-दुख, विरह से गुजरते हुए गज़ल आज सशक्त एरां पसंदीदा विधा बन चुकी है प्रारंभ में उर्दू अरबी फारसी भाषाओं में शैरो-शायरी नज्म और गज़लों का दौर चला, गालिब, फिराक से वसीम बरेलवी राहत इंदौरा को लोगों ने सर आँखों पे बिठाया और वक्त के साथ हिंदी में भी गज़लें लिखी जाने लगी और लोगों ने स्वीकार भी किया साहित्य देश काल वातावरण के साथ परिवर्तित होता आया है मुगल कालीन भारत में उर्दू बोलने समझने वाले बहुतायत में थे, संभवतः यही कारण रहा कि मुगलों के बाद ब्रिटिश युग और फिर आधुनिक काल के आते आते उर्दू पढ़ने, लिखने

बोलने में कमतर होती गई और धीरे-धीरे हिंदी अपना स्थान बनाने लगी जाहिर है कि गजले भी इससे अछूती नहीं रहीं अभी तक हिंदी के साथ उर्दू के लोकप्रिय शब्दों का प्रयोग हो रहा है, लेकिन धीरे धीरे हिंदी में धड़ल्ले से गजलें लिखी जाने लगी है

अधिकांशतः साहित्य लेखन में नायक नायिकाओं का चलन आम बात है, श्रंगार और प्रेम से ओत प्रोत रचना तो इनके बिना संभव नहीं कहानी, नाटक उपन्यास में तो अनेक पात्र होते हैं कविता गीत गजल में भी किसी न किसी रूप में होते ही हैं खंडकाव्य, महाकाव्य में तो पात्रों की कोई सीमा ही नहीं जीवनी, आत्मकथा तो बिना नायक/नायिका के गढ़ा जाना संभव ही नहीं हिंदी गजलै। भी इसकी अपवाद नहीं साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है सामाजिक घटनाओं पर आधारित सृजन बहुतायत में लिखा जाता है वही कालांतर में स्वयंमेव इतिहास बन जाता है साहित्यकार के सामाजिक दायित्व भी होते हैं, बिना सामाजिक सरोकारों के लिखा गया साहित्य कतई उपयोगी नहीं हो सकता और न ही ग्राह्य और दीर्घजीवी तो कतई नहीं

भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान फिर भारत के संविधान लिखे जाने का गौरव हासिल करने वाले बाबा साहब डॉ भीम राव आंबेडकर अपने कृतित्व से भारतीय जनमानस के दिलों दिमाग पर छा गए संविधान में उन्होंने वे प्राविधान किए जिनकी जरूरत थी और सदियों से प्रतीक्षा थी अस्पृश्यता, भेदभाव सामाजिक असमानता को समाप्त करने के संवैधानिक व्यवस्था दे कर वे आम आदमी से महामानव बन गए

भारत के बंटवारे के दौरान सांप्रदायिक दंगों के खून खराबे को देखने के बाद शान्ति और मानवता का सन्देश देने वाले बुद्ध के धम्म को अंगीकार

करके विश्व पटल पर डॉ आंबेडकर पुनः चर्चित हुए और लोगों को समुचित राह दिखा गए, यही नहीं आर्थिक क्षेत्र में प्रभावी व्यवस्था दी रोजगार दफ्तर, रिजर्व बैंक की स्थापना कर वे विकराल समस्याओं का स्थायी हल देने की दिशा में अभूतपूर्व व्यवस्था दे गए वे यहीं नहीं रुके शिक्षा, संघर्ष और संगठन जैसे प्रभावी सुझाव बताये, साथ ही सबको पढ़ने का अधिकार दिलाया और सबसे बड़ी बात अभिव्यक्ति और प्रतिरोध करने के अधिकार के साथ धर्मनिरपेक्ष राज्य में लोकतांत्रिक व्यवस्था उपलब्ध कराते हुए मानव-मानव में समता और प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा के संरक्षण को प्रावधानित कर अद्वितीय हो गए उनके द्वारा निरूपित मानवीय समता बंधुता एरां राष्ट्रीय एकता तथा उसके विकास के लिए सतत वैज्ञानिक उपाय करते रहने के सन्देश ने उन्हें राष्ट्रवादी और महामानव बना दिया

आंबेडकरवादी चेतना के सन्दर्भ में 'आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के संपादक ने पत्रिका के तीसरे अंक के संपादकीय में लिखा है, "व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप में आंबेडकरवादी चेतना के बिंदु है-

1. बुद्ध और उनके धम्म को डॉ. आंबेडकर के दृष्टिकोण से स्वीकार करना
2. ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को नकारना
3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाना
4. हिन्दु देवी देवताओं को काल्पनिक मानना तथा उनकी चर्चा भी नहीं करना
5. जातिवाद, लिंगवाद और वर्चस्ववाद का विरोध करन
6. अंतर्जातीय विवाह का समर्थन करना
7. अन्धविश्वास ढोंग, और पाखंड की आलोचना करना

8. समता स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय और प्रेम की भावना को धारण करना

9. “शिक्षित हो, संगठित हो और संघर्ष करो” की प्रेरणा देना।

10. मैत्री करुणा और शील का सन्देश देना।

आज हम विषम परिस्थितियों के दौर से गुजर रहे हैं और ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में प्रभावित हो रहा है पत्रकारिता भी भटक रही है आधुनिक काल में दूरदर्शन के विभिन्न टीवी चैनलों पर अपसंस्कृति परोसी जा रही है जिसके फलस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों का क्षरण हो रहा है, लोग दिग्भ्रमित हो रहे हैं। ऐसे में साहित्यकारों का नैतिक दायित्व बनता है कि वे मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक एंरां समाज को सही दिशा प्रदान करने वाले साहित्य का सृजन करें जो आंबेडकरवादी चेतना के बिना संभव ही नहीं। यह प्रसन्नता का विषय है कि गजलों में भी आंबेडकरवादी चेतना दिखने लगी है...उदाहरणार्थ

1. न कहीं परमात्मा न आत्मा न भूत ओ पिशाच
भूत प्रेत पिशाच की लीलाओं से बिलकुल न डरें।।

कमकांडों से हमें कुछ भी मिलना नहीं,
भूले सच की राह जो उन भूलों को हरगिज न करें
अपने ज्ञान विवेक के अनुसार हम आगे बढ़े
कर भरोसा बुद्धि पर न हुक्का दूसरों का भरे
जीवन में हम सब रखें मेलजोल में पाकीजगी
शील करुणा सत्य और समता का पालन करें।।

संदभ... (आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के अंक 3
जुलाई -सित 2021) में प्रकाशित सुपसिद्ध
गजलकार श्यामलाल राही की गजल

2. आचरण कर्म कोई सा आडम्बर छोड़ो तो सही
राह मानवता की चुनो पाखंड छोड़ो तो सही।।

अंग्रेज देश तो छोड़े मनोहर बदले हालात कहाँ
सामाजिक और आर्थिक भेदभाव छोड़ो तो सही।।

सन्दर्भ.... आंबेडकरवादी साहित्य पत्रिका के अंक 4
(अक्टूबर... दिस. 2021) में प्रकाशित डॉ. राम
मनोहर राव की गजल

3. सब शिक्षित जन संगठित बनो
बाबा साहब का पैगाम सुनो।।

कोई काम असंभव न होगा
पूरे होंगे अरमान सुनो।।
संगठन में शक्ति होती है
बिगड़े बन जाते काम सुनो।।

संदर्भ... ‘आंबेडकरवादी चेतना की गजलें’ साझा
संग्रह, के पेज 56 पर प्रकाशित वरिष्ठ कवि मनोहर
लाल प्रेमी की गजल संपादक डॉ राम मनोहर राव

4. दृष्टि-दशा तय नहीं अगर, तो सृजन है बेकार
वंचित का साहित्य नहीं आंबेडकरवाद बगैर।।

सन्दर्भ... डॉ राम मनोहर राव द्वारा संपादित
“आंबेडकरवादी चेतना की गजलें” के पृष्ठ 96 पर
साहित्यकार समालोचक देवचन्द्र भारती प्रखर की
गजल का एक शेर स्पष्ट है कि आंबेडकरवादी
साहित्यकार द्वारा रचित गजलों में अब निश्चित रूप
से पर्याप्त आंबेडकरी चेतना का समावेश होने लगा
है, यह आंबेडकरी आंदोलन के लिए निश्चित ही
अच्छे संकेत हैं।



मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको

अदम गोंडवी

आइए महसूस करिए ज़िन्दगी के ताप को मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको। जिस गली में भुखमरी की यातना से ऊब कर मर गई फुलिया बिचारी एक कुएँ में डूब कर। है सधी सिर पर बिनौली कंडियों की टोकरी आ रही है सामने से हरखुआ की छोकरी। चल रही है छंद के आयाम को देती दिशा मैं इसे कहता हूँ सरजूपार की मोनालिसा। कैसी यह भयभीत है हिरनी-सी घबराई हुई लग रही जैसे कली बेला की कुम्हलाई हुई। कल को यह वाचाल थी पर आज कैसी मौन है जानते हो इसकी खामोशी का कारण कौन है। थे यही सावन के दिन हरखू गया था हाट को सो रही बूढ़ी ओसारे में बिछाए खाट को। डूबती सूरज की किरनें खेलती थीं रेत से घास का गट्टर लिए वह आ रही थी खेत से। आ रही थी वह चली खोई हुई जज्बात में क्या पता उसको कि कोई भेडिया है घात में। होनी से बेखबर कृष्णा बेखबर राहों में थी मोड़ पर घूमी तो देखा अजनबी बाहों में थी। चीख निकली भी तो होठों में ही घुट कर रह गई

छटपटाई पहले फिर ढीली पड़ी फिर ढह गई। दिन तो सरजू के कछारों में था कब का ढल गया वासना की आग में कौमार्य उसका जल गया। और उस दिन ये हवेली हँस रही थी मौज में होश में तो कृष्णा थी पिता की गोद में। जुड़ गई थी भीड़ जिसमें जोर था सैलाब था जो भी था अपनी सुनाने के लिए बेताब था। बड़ के मंगल के कहा काका तू कैसे मौन है पूछ तो बेटी से आखिर वो दरिदा कौन है। कोई हो संघर्ष से हम पाँव मोंड़ेगे नहीं कच्चा खा जाएँगे ज़िन्दा उनको छोड़ेंगे नहीं। कैसे हो सकता है होनी कह के हम टाला करें और ये दुश्मन बहू-बेटी से मुँह काला करें। बोला कृष्णा से बहन सो जा मेरे अनुरोध से बच नहीं सकता है वो पापी मेरे प्रतिशोध से। पड़ गई इसकी भनक थी ठाकुरों के कान में वे इकट्ठे हो गए थे सरपंच के दालान में। दृष्टि जिसकी है जमी भाले की लम्बी नोक पर देखिए सुखराज सिंग बोल हैं खैनी ठोंक कर। क्या कहें सरपंच भाई क्या ज़माना आ गया कल तलक जो पाँव के नीचे था रुतबा पा गया। कहती है सरकार कि आपस मिलजुल कर रहा सुअर के बच्चों को अब कोरी नहीं हरिजन कहो। देखिए ना यह जो कृष्णा है चमारो के यहाँ पड़ गया है सीप का मोती गँवारों के यहाँ। जैसे बरसाती नदी अल्हड़ नशे में चूर है हाथ न पुट्टे पे रखने देती है मगरूर है। भेजता भी है नहीं ससुराल इसको हरखुआ फिर कोई बाँहों में इसको भींच ले तो क्या हुआ। आज सरजू पार अपने श्याम से टकरा गई जाने-अनजाने वो लज्जत ज़िन्दगी की पा गई।

वो तो मंगल देखता था बात आगे बढ़ गई वरना वह मरदूद इन बातों को कहने से रही। जानते हैं आप मंगल एक ही मक्कार है हरखू उसकी शह पे थाने जाने को तैयार है। कल सुबह गरदन अगर नपती है बेटे-बाप की गाँव की गालियों में क्या इज्जत रहेगी आपकी। बात का लहजा था ऐसा ताव सबको आ गया हाथ मूँछों पर गए माहैल भी सन्ना गया था। क्षणिक आवेश जिसमें हर युवा तैमूर था हाँ, मगर होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। रात जो आया न अब तूफान वह पुरजोर था भोर होते ही वहाँ का दृश्य बिलकुल और था। सिर पे टोपी बेंत की लाठी संभाले हाथ में एक दर्जन थे सिपाही ठाकुरों के साथ में। घेरकर बस्ती कहा हलके के थानेदार ने- “जिसका मंगल नाम हो वह व्यक्ति आए सामने” निकला मंगल झोपड़ी का पल्ला थाड़ा खोलकर एक सिपाही ने तभी लाठी चलाई दौड़ कर। गिर पड़ा मंगल तो बूट से टकरा गया सुन पड़ा फिर पड़ी बस होश फिर जाता रहा होश खोकर वह पड़ा था झोपड़ी के द्वारा पर। ठाकुरों से फिर दरोगा ने कहा ललकार कर- “मेरा मुँह क्या देखते हो! इसके मुँह में थुक दो आग लाओ और इसकी झोपड़ी भी फूँक दो” और फिर प्रतिशोध की आंधी वहाँ चलने लगी बेसहारा निर्बलों की झोपड़ी जलने लगी। दुधमुँहा बच्चा व बुढ़ा जो वहाँ खेड़े में था वह अभागा दीन हिंसक भीड़ के घेरे में था। घर को जलते देखकर वे होश को खोने लगे कुछ तो मन ही मन मगर कुछ जोर से रोने लगे। “कह दो इन कुत्तों के पिल्लों से कि इतराएँ नहीं

हुक्म जब तक मैं न दूँ कोई कहीं जाए नहीं” यह दरोगा जी थे मुँह से शब्द झरते फुल से आ रहे थे ठेलते लोगों को अपने रूल से। फिर दहाड़े, “इनको डंडों से सुधारा जाएगा ठाकुरों से जो भी टकराया वो मारा जाएगा। इक सिपाही ने कहा, “साइकिल किधर को मोड़ दें होश में आया नहीं मंगल कहो तो छोड़ दें”। बोला थानेदार, “मुर्गे की तरह मत बांग दो होश में आया नहीं तो लाठियों पर टांग लो। ये समझते हैं कि ठारूँ सक उलझना खेल है ऐसे पाजी का ठिकाना घर नहीं है, जेल है”। पूछते रहते हैं मुझसे लोग अकसर यह सवाल “कैसा है कहिए न सरजू पार की कृष्णा का हाल”। उनकी उत्सुकता को शहरी नग्नता के ज्वार को सड़ रहे जनतंत्र के मक्कार पैरोकार को। धर्म संस्कृति और नैतिकता के ठेकेदार को प्रांत के मंत्रीगणों को केद्र की सरकार को। मैं निमंत्रण दे रहा हूँ- आएँ मेरे गाँव में तट पे नदियों के घनी अमराइयों की छाँव में। गाँव जिसमें आज पाँचाली उघाड़ी जा रही या अहिंसा की जहाँ पर नथ उतारी जा रही। हैं तरसते कितने ही मंगल लंगोटी के लिए बेचती है जिस्म कितनी कृष्णा रोटी के लिए।

देवचंद्र भारती 'प्रखर' की गज़लें

इन जालिमों के साथ आखिर क्या करें।
मुश्किल बड़ी है, सोचते रहते 'प्रखर'।।

(1)

खाना पानी हवा जिंदगी के लिए।
और क्या चाहिए आदमी के लिए।।

रोज पूरी करो बस जरूरत यही।
देशवासी खड़े बंदगी के लिए।।

बोलते हो यहाँ और जाकर वहाँ।
तुम बताओ भला किस खुशी के लिए।।

जब अंधेरा घिरा है दिलों में यहाँ।
क्यों जलाते शमा रोशनी के लिए।।

कह रहे हैं 'प्रखर' ना दिखावा करो।
कर सको तो करो कुछ सही के लिए।।

(2)

काबिज सितमगर हैं ज़मीं पर बुद्ध की।
ये वंचितों पर ढाहते हरदम कहर।।

ये जुल्म करते हैं हमेशा नेक पर।
इनको नहीं अच्छी लगे सच्ची डगर।।

ये बात हरदम जाति मजहब की करें।
इंसानियत की बात पर फेरें नजर।।
हड़ताल हक के वास्ते हमने किया।
इन पर असर पड़ता नहीं, हैं बेअसर।।

(3)

बसे हैं यहाँ जो सितमगर,
उन्हें धूल में है मिलाना।

उठा सिर रहे सामने जो,
उन्हीं की जड़े हैं हिलाना।

मरे पीढ़ियाँ दुश्मनों की,
निजी पीढ़ियाँ है जिलाना।

'प्रखर' दम उन्हें अब दिखा दो,
कि गुल रेत में है खिलाना।

(4)

ऐ जालिमों, जाओ सुधर,
हम जुल्म अब सहते नहीं।
मत झाड़ना अब रौब तुम,
हम दाब में रहते नहीं।

तुम मत गुलामी चाहना,
यह काम हम करते नहीं।

किस्सा कहो मत रूह का,
हम भूत से डरते नहीं।

है चेतना जागी 'प्रखर'
अब ढोंग में फँसते नहीं।

(5)

गरीबी बेबसी की जब कभी भी बात आती है।
गरीबों के मसीहा की हमें तब याद आती है।।

चला आता हमारे सामने इतिहास वो फिर से।
कभी जब भी गुलामी और गम की रात आती है।।

जहाँ पर जाति के कारण नहीं घोड़ी चढ़े दूल्हा।
वहाँ पर सोच लो फिर किस तरह बारात आती है।।

बहाते अशक पानी की तरह दिन-रात बेचारे।
यहाँ मजदूर की तो रोज ही बरसात आती है।।

नहीं हिम्मत सभी में है, लड़ें जो जुल्म से 'प्रखर'।
हजारों में यहाँ बस एक को औकात आती है।।

(6)

सुनो जी! छोड़ दो शेखी, इसी में होशियारी है।
कभी बारी तुम्हारी थी, अभी हमारी है।।

गिराओगे हमें कैसे, हराओगे हमें कैसे?
हमें संघर्ष प्यारा है, हमें उम्मीद प्यारी है।।

हमारे साथ हैं जो भी, सभी हैं धम्म के ज्ञानी।
हमारा संघ है आला, हमारी राह न्यारी है।।

हमें क्या नाम से लेना, हमारा काम है ऊंचा।
हमें तो लक्ष्य पाने की अभी छाया खुमारी है।।

गरीबी में पले हैं और नाता है गरीबों से।
हमारी दृष्टि में नीचा नहीं कोई भिखारी है।।

(7)

वे सभ्य उनको कह रहे।
जो डाँट उनकी सह रहे।।

नायक उन्हें वे मानते।
जो धार के संग बह रहे।।

वे बोलते खुद को 'दलित'।
जो सुख-सदन में रह रहे।।

आंबेडकर में मत सभी।
मतभेद में हैं ढह रहे।।

जो थे कभी शोषित 'प्रखर'।
वे शोषकों में रह रहे।।

ओमप्रकाश गौतम की ग़ज़लें

(3)

खुशक दरिया में रवानी, की बात करता हूँ।
लोग प्यासे हैं तो पानी, की बात करता हूँ।

तेरे किस्से तो हवेली, से हैं शुरू होते।
मैं तो गुरबत की कहानी, की बात करता हूँ।

है बचाया जिसे अज्दाद, ने लहू देकर।
मिट रही है वो निशानी, की बात करता हूँ।

लिख चुका हुस्न तथा इस्क, के कसीदे अब।
खेत खलिहान किसानी, की बात करता हूँ।

साथ उनका ही मिला कब, हमें भला 'गौतम'।
जिनके मैं अशक-बयानी, की बात करता हूँ।

(2)

तुम्हें धन ये दौलत जो शोहरत मिली है।
समझते हो खुद के, बदौलत मिली है।

है डूबा सफ़ीना किनारों, पे आकर।
वजह है यही जो ये, गफलत मिली है।

चला था लगाने में, सबको गले से।
हमें आज बदलें में, नफरत मिली है।

है अम्रों का, भले उनका दावा।
मगर है हकीकत की, दहशत मिली है।

चलेंगे कहां से, है मंजिल कहां अब।
करो ये मनन गर जो, फुरसत मिली है।

कौन है अपना कौन पराया, मैं ये सपना छोड़ दिया।
मुल्क के सांप मेरे कहते हैं, मैंने डसना छोड़ दिया।

सुन लो परिदों तुम्हें है कहना, देश के इन सैय्यादों से।
मुफ्त के दानों के चक्कर में, मैंने फंसना छोड़ दिया।

युग युग से हम चलते आए, झूठ की एक परिपाटी पर।
जब से कही लिखी बातों को, तर्क पे कसना छोड़ दिया।

हम तो हैं रैदास के वंशज, मन को चंगा रखते हैं।
मन में राम बगल में छूरी, नाम का जपना छोड़ दिया।

अपने अंदर जब जब झांका, ऐबों का भंडार मिला।
तब से तो हमने ऐ गौतम, गैर पे हंसना छोड़ दिया।

(4)

किसी की आह पे वो, वाह वाह करते हैं।
लगा के आग जो गुलशन तबाह करते हैं।

मरा जमीर है जिनका, भला वो क्या जाने।
गरीब सड़कों पे कैसे, निबाह करते हैं।

बयान हक भी अगर, मुल्क में बगावत है।
हमें भी फख है कि हम, गुनाह करते हैं।

हैं वो परिदे जो लालच में 'मुफ्त दानों' के।
वो अपनी रात को खुद ही, सियाह करते हैं।

नए जमाने के इन आशिकों, की है फिरतर।
किसी से इशक किसी से, निकाह करते हैं।

जो ना मिला जमीं पे, समंदर तलाश कर।

मस्जिद तलाश ले या तो मंदर तलाश कर।।

बर्बादियों का फिर भी, जो अग्यार ना मिले।
एक बार यार खुद के, भी अंदर तलाश कर।।

जलवा विखेरे मुल्क, मेरा कायनात में।
इस कौम का एक, ऐसा पर्यंबर तलाश कर।।

हैं ऐशगाह आज, इबादत के घर सभी।
इस दौर में है कौन, कलंदर तलाश कर।।

हैं ऐशगाह आज, इबादत के घर सभी।
इस दौर में है कौन, कलंदर तलाश कर।।

अमरराइयां वो बाग की, बरगद की छांव हो।
दिखता कहां है आज, वो मंजर तलाश कर।।

अमरराइयां वो बाग की, बरगद की छांव हो।
दिखता कहाँ है आज, वो मंजर तलाश कर।।

रूतबा बड़ा था नाम था सब खाक हो गए।
इस वक्त का है कौन, सिकंदर तलाश कर।।

‘गौतम’ जलीं हैं बस्तियां, तो उसका दोष क्या।
हमने दिया मशाल जो बंदर तलाश कर।।

श्यामलाल राही प्रियदर्शी की गजलें

दरख्तों पर लगे फल काम तो आते किसी के हैं।
बहुत से लोग खुश हो गीत तो गाते किसी के हैं।

बनाई मुफ्तखोरी की रिवायत चालाक लोगों ने,

धर्म के नाम हर दिन खीर वो खाते किसी के हैं।

जिन्हें बच्चों से अपने कोई उल्फत न रही बाकी,
वह पीकर घर से बाहर रोज ही जाते किसी के हैं

कोई घर वाला न पूछे ये रुपया लाए कहां से हो,
जो लाते रुपया रिश्वत का वो तो लाते किसी के हैं।

बहुत से लोग डरते हैं बुरे ऐमालों से भाई,
बुरे ऐमाल से चेहरे भी मुरझाते किसी के हैं

वतन महफूज रखने को कई कुर्बान होते हैं,
वतन खातिर कई बेटे तो मर जाते किसी के हैं

शहर की गालियों में रोते सिसकते मिलते हैं बच्चे
भाई खुश रंग बच्चे राही मुस्काते किसी के हैं।

अपने बुरे आमाल से डर क्यों नहीं जाते।
बिगड़े हुए हालात सुधर क्यों नहीं जाते।

जब से रिटायर हम हुए बेहाल हो गए,
अच्छे पुराने दिन सनम घर क्यों नहीं आते।

नेता कहे कि भूखे यह क्यों रोटी को मांगे,
रोटी की जगह मालपुआ क्यों नहीं खाते।
बेहिस हुआ है जिस्म ईमा संग हो गया,
एहसास बेवफाई से मर क्यों नहीं जाते।
माना की गन्दी हो गई पर गंगा है तो ये वही,
गंगा नहा के लोग है तर क्यों नहीं जाते।

बैठे किनारे गिन रहे यह मौजें हैं तन्हा,
जाना उन्हें उस पार मगर क्यों नहीं जाते।

बेकार गल्ला कर रहे गोदामों में सड़ा सड़ा,
भूखों की थाली खाने से भर क्यों नहीं जाते।

अज्दाद की गर याद तुम्हें आती है सनम,
शम्मा जला के कब्र पर धर क्यों नहीं जाते।

यारा जो है दस्तूत ए जहाँ उसको ही करो,
वायदे से अपने राही मुकर क्यों नहीं जाते।

बहरों के बीच रह के मैं भी बहरा हुआ हूँ।
दो गाम भी चल पाया न बस ठहरा हुआ हूँ।

मुद्दत से मेरी प्यास को मुझे कुछ नहीं मिला,
स्वाति के लिए तरसता पपिहरा हुआ हूँ।

यह तो समय की बात है जो हाल यह हुआ,
कभी मैं भी उपजाऊ था अब सहरा हुआ हूँ।

मैं भी वतन पस्त हूँ भाई सब से कह रहा,
कौमी झंडे सा आजकल मैं फहरा हुआ हूँ।

सरकार से छुट्टी मिली तो काम कुछ नहीं,
अजगर की तरह राह में बस पसरा हुआ हूँ।

राही मेरे शबाब को तुम लगाओ न नजर,
लोगों के करम से जरा सा निखरा हुआ हूँ।

अजब है माशारा मैं फिर भी हूँ निराश नहीं।
ये और बात है कि मुझमें कोई उल्लास नहीं।

पहले हमसे ठिटोली करती रहती थी हरदम,
आजकल करती है वह भी कोई परिहास नहीं।

कागजों पर तो बहुत तरक्की दिखाई जाती है
तरक्की दिख रही है गोया हमारे पास नहीं।

हमें कमजोर और गुलाम है बताया गया,
हमें पढ़ाया गया अपना वह इतिहास नहीं।

सुखा सावन गया भादों भी है सूखा ही रहा,
गर्मियां सख्त है लगता तो यह मधुमास नहीं।

मिजाज इनका तो गिद्धों की तरह यारों हुआ,
नोंचते जिन्दा को यह नोंचते हैं लाश नहीं।

जिस्म का पोर पोर करने लगा आवाजें है,
मुहब्बत आती है इस उम्र में उब रास नहीं।

राही हर घर का ही भाई चलन अनोखा है,
किसी बहू को पसंद होती अपने सास नहीं।

इस दिल के कारोबार का आगाज ही गलत।
घाटा यकीनी जिसमें वह व्यापार ही गलत।

ये मर्यादायें तोड़ तोड़ बिगाड़े माशारे को हैं,
माया नगरी की दुनिया का व्यवहार की गलत।

तुम चापलूसों से बचा के अपने को रखिए,
धंधे और बड़े रोजगार में चाटुकार ही गलत।

हर जगह पर ऐतराज है जताया नहीं जाता,
बीवी के किसी काम में ऐतराज ही गलत।

शीरी जुवां से बनते सभी बिगड़े काम हैं,
यह तेरी गुप्तगू का ये सनम अंदाज ही गलत।

ग़म के समय में होता है पहले अपने भी सोचो,
जो हम गलत तो सारा है संसार ही गलत।

उससे करो फरियाद राही जो कुछ तो करें भी,
हाकिम अगर नामर्द तो फरियाद ही गलत।

वैश्विक आंबेडकरवादी साहित्यकारों के संगठन (GOAL) पर एक ग़ज़ल

भीम के अनुयायी हम हैं भीम का ही गोल है।
वह मसीहा देश के हैं उनका न कोई मोल है।

बाबा के सिद्धांत हमको लगते प्यारे हैं सदा,
गोल बाबा के कथन का पीटता भाई ढोल है।

यों तो कितने संगठन दावा करें वो भीमवादी हैं,
पर हमारा संगठन सब संगठनों में अनमोल है।

कुकुरमुत्तों की तरह उग आए कितने संगठन,
झूठे आंबेडकर वादियों की खोलता यह पोल है।

बनकर हिमायती भीम के कुछ करते झूठी बातें हैं,
चढ़ा रखा उन लोगों बाबा का झूठा खोल है।

सच्चे आंबेडकरवादी हम हमें भीम को लिखना पढ़ना
ह

आइए जुड़ जाइए ये विचारों का घना जोल है।
हमने भीम को समझा है और वही समझाते हैं,
संगठन 'राही' जानता सब भीम का भूगोल है।

बना पागल वो पूछे हैं कि तू पागल हुआ कैसे।
समझ आता नहीं मेरी कि ये बरतब हुआ कैसे।

सुबह जागा तो खुद को होश में पाया नहीं मैंने,
सुबह अपने से मैं दो चार हूँ यारों हुआ कैसे।

समय को बांधने की कोशिशें करता रहा अब तक
समय फिसला मेरी मुट्ठी से पर ये सब हुआ कैसे।

कभी महशर में गर मिलना हुआ तो पूछूंगा उससे
जमीं पर तूने था बेहिस किया पर ये हुआ कैसे।

तेरी तस्वीर के संग ही गुजारे हमने इतने दिन,
खुदी अब पूछे है मुझसे कि यह यारा हुआ कैसे।

तजल्ली के लिए हमने जलाया अपना घर राही,
अंधेरा पूछता मुझ से कि घर रोशन हुआ कैसे।

अरविन्द असर की ग़ज़ल

समता, समानता की अधर में ही नाव है,
भारत में इन दिनों भी ग़ज़ब भेदभाव है।

देता नहीं जो धर्म तुझे मान रंच भी,
क्यों तेरा ऐसे धर्म से अब भी लगाव है।

पाखण्ड उस तरफ है तो विज्ञान इस तरफ,
अब आपके ही हाथों में इसका चुनाव है।

जो लोग खुद को जन्म से ऊंचा समझ रहे,
समझो की उनमें ज्ञान का अब भी अभाव है।

अब भी लगा है रोग छुआं छूत का जिन्हें,
अब भी ख़राब धर्म का उन पर प्रभाव है।

बनना है तुमको मुल्क का शासक अगर, तो फिर,

बहुजन की एकता ही हमारा सुझाव है।
बचना है तुमको धर्म के शोषण से गर, 'असर'
आंबेडकर का वाद ही अपना बचाव है।

सम्पर्क - डी-2/10, रेडियो कालोनी,
किंग्स्वे कैम्पस, दिल्ली-110009
दूरभाष- 9871329522, 8700678915

संजय कुमार सिंह की नज्म और ग़जल

पशोमा आज हूँ कितना
गिरेबाँ देखकर अपना
लगी है आग सीने में
जरा तुम देख तो जाओ।

कहाँ है आँख में आँसू
कहाँ पसरा अँधेरा है
कहाँ है रात रौशन
कहाँ ठहरा सवेरा है।

चलो तुमको दिखता हूँ
कहाँ है महबूब की महफिल
कहाँ गम का बसेरा है।

कहाँ है मजलूम सी दुनिया
कहाँ दम तोड़तीं गलियाँ
कहाँ रहबर लुटेरा है।
कहाँ है फूल सा मौसम
कहाँ बस्ती में फाँका है।
कहाँ खालिश ठहाका है
कहाँ है खेत में काका।

कहाँ जालिम का डेरा है।

कहाँ है उदास हर कोना
कहाँ है खाक भी सोना।
कहाँ है जान की बाजी

कहाँ है मौज में पाजी।
कहाँ बेकस का गुरबत है
कहाँ चाँदी का परबत है।
कहाँ पल-पल बखेड़ा है।

हकीकत जान लो भाई
अब कुछ ठान लो भाई।
तुम्हें मालूम तो होगा
सियासत खेल है ऐसा
जिसमें सिर्फ है पैसा।

कहाँ है हाथ में हिवस्की
कहाँ है होठ पे मुसकी
कहाँ पकती अभी मुरगी
कहाँ है वोट की गिनती
कहाँ कुर्सी का फेरा है।

कहूँ मैं तफसील से किस्सा
कहाँ पे खो गया हिस्सा
करो कुछ भी तो तुम गुस्सा।
यहाँ है झूठ का वादा
हर चेहरे पे लबादा
व्यवस्था खेल है उसका
सितम से मेल है जिसका
बहुत पानी बह गया सिर से
उठाओ आवाज अब फिर से।
कुछ तो फैसला लो खुद से
कहो आजाद हो कैसे?
कहाँ हैं लोग बंदिश में
कहाँ साँसों पे घेरा है।

सुनो तुम गौर से मुझको
कहो किसकी कहानी है
कहाँ पर हक लूटा है
कहाँ विश्वास छूटा है
कहाँ पे पुल टूटा है
कहाँ है जाल में मछली
कहाँ बैठा फँसेरा है।

रहोगे चुप हमेशा क्या
सहोगे रोज तमाशा क्या
चलो अखलाक परआओ
दरो-दीवार को छोड़ो
गलत बुनियाद को तोड़ो
कहाँ है जुल्म का पहरा
कहाँ दुश्मन का बेड़ा है।

हैराँ हूँ इस बात से कि किस गाँव में हूँ,
किस का है ये शहर।
किसे अदब से कहूँ हुजूर,
जो करे न मुझे कहीं दर-ब-दर।।

दर्द की इन्तहाँ यहाँ, जुबाँ छिल गयी,
पाँव के छाले उतर गए।
चल तो मैं ही रहा हूँ, पर कहाँ मंजिल,
किसका है ये सफर।

हलस कर अब कहाँ मिलता है
कोई किसी गाम पर संजय।
खिलने से पहले ही क्यूँ झुलस जाता है
ये रिश्ते का शज़र?।

एक कशिश है आग में,
कौन है जो जानता जलाने का हुनर।

पानी को कोई कहाँ तक बचाएगा,
जब नदी हो गयी बंजर।।

हर तरफ है वही धुआँ,
सितम का वही खौफनाक सा मंजर।
मेरी आरजू में है मेरे प्यार का इजहार,
तेरे हाथ में है खंजर।।

मुझे जब कत्ल ही करना था
तो वीराने में ले जाते ऐ! दोस्त!
तुम्हारे इस फैसले से यकीन कर,
खुद बहुत हैरान है खबर।।

संजय कुमार सिंह

मधेपुरा बिहार।

प्रिंसिपल- पूर्णिया महिला कॉलेज

पूर्णिया- 854301

मो0 9431867283





राम मनोहर राव की सजलें

उसे कुरेदने से फायदा होगा क्या
खुद को भी कोसने से होगा क्या

वह तुम्हारे हिसाब से चलेगा नहीं
सुन तुम्हारी उन्हें फायदा होगा क्या

चाहे तुम ज़ालिम कहो या जल्लाद
यूँ पत्थर पे सिर मारने से होगा क्या

बांटा अवाम, यूँ ही नहीं हजारों में
बंटो को साथ बिठाने से होगा क्या

और फिर जिनके लिए इतने परेशाँ
सोये ज़मीर की पैरवी से होगा क्या

हारे हुए जब समझें खुद को फन्ने खां
ऐसों को लड़ाने से फायदा होगा क्या

अपनों में ऊँच-नीच असमानता कैसी
हौसले बिन मुहिम छेड़ने से होगा क्या

भीड़ का नहीं होता अनुशासन, न लक्ष्य
अपनी ढपली अपने राग से होगा क्या।।

जिन वजहों से टूटे-बंटे, है खात्मा ज़रूरी

बिन सदरत किसी के, अंजाम होगा क्या।।

न कोई समझाया, न समझ पाया उन्हें
कोशिश किसी ने की, गज़ब पाया उन्हें

दो-दो हाथ करने को, गर के ऐसे सुनाते
जिरह जिसने भी की, बेसब्र पाया उन्हें

साम, दाम, दंड भेद आजमाते रहे सब
झूठ पकड़ो कितने, बेढ़ब पाया उन्हें

दिन रात उपदेश, महिमा भगवान की
भय तो औरों को, बेअदब पाया उन्हें

सभी का रक्त एक जैसा सभी जानते
बतायें ऊँच नीच, विभाजक पाया उन्हें

मेहनत मशक्कत से कमा कुछ लिया
खर्च आडम्बरोँ में, लुटेरा ही पाया उन्हें

बलवान से गिड़गिड़ाने में शर्माये नहीं
कमजोर मुखातिब, शातिर पाया उन्हें।।

नज़रें इनकी तो हमीं पे गड़ी हैं
बनके मुसीबत राहों में खड़ी हैं

जो पांच साल पे करते थे वादे
अब उनको अपनों की पड़ी है

जितनी लगती थीं वे लुभावनी
ज्यादातर वही अंदर से सड़ी हैं

समझाते थे गढ़ के कहानियाँ
वे साज़िशन आपस में जुड़ी हैं

लगता है सब की एक ही मंशा
कुछ जली कुछ बुझी ये लड़ी हैं

किया फिर से तबाही का रुख
बर्बादी वास्ते हमारे वो मुड़ी हैं

सँभल किसी सदमे से न पाएँ
लगा रखी झटकों की झड़ी हैं

ऐसा नहीं कि हमीं हैं प्रभावित
जिम्मेदारी हम सब की बड़ी है

“मनोहर” रोक पाओ तो रोको
सँभलने की आखिरी घड़ी हैं।।

दो तिहाई धरती, भरा पानी ही पानी
जीवन का आधार भी होता यह पानी

गर्मी जब भी लगती, बहे पसीना बन
मानव-काया में अधिकांश यही पानी

कहते आँसू जब यह आँखों से बहता
दुःख-सुख दोनों हालत आँखों से पानी

कमी पड़ते पानी की, हो खतरे में जीवन
जल ही जीवन, उपचार स्वागत में पानी

बर्तन के मुताबिक, यह आकार बदलता

घुलते नमक शकर, वजूद मिटा दे पानी

तीनो रूप ठोस द्रव गैस, ये कर ले धारण
गर्म भाप से बादल, हिम पिघले तो पानी

सागर में अथाह, यही नदियों में बहता
भोजन की सुगंध पा, मुँह में आए पानी

वर्षा में खुश कुदरत हो धरती हरी भरी
भरे पोखरे, तुम भी करो इकट्ठा पानी

पावस ऋतु बरसे, सावन माह सुहाये
जले जवाँ बदन, गिरते जुल्फों से पानी

इंसान में प्यास जगी ‘मनोहर’ कैसी-कैसी
स्वार्थी हुए खून के प्यासे, खून हुआ पानी।।

कुछ न कुछ करने की, है लगी कैसी होड़
हद से गुजर जाने की, ये लगी जैसे होड़

जिसकी जैसी फितरत हो जाते कहीं पे शुरू
करते हैवानियत, गला इंसानियत का मरोड़

शिक्षालय में शिक्षक, छुवाछूत पुख्ता करें
वे छूते ही मटका, सिर देते बच्चे का फोड़

हुए छात्र आंदोलित, आए विरोध में उत्तर
बढ़ी फीस इतनी, गरीब क्या पढ़ाई दे छोड़

विधायक दलों से यूँ टूटते, जैसे फल पेड़ से
देखिए लोकतंत्र में, है कैसा आया ये मोड़

सच सामने लाने का दायित्व जिसका रहा
सच छुपा जाति बता, रहे भाईचारे को तोड़

कोई जोड़े भारत, कोई जोड़े नेता 'मनोहर'
अरे!मानवता के निमित्त दिलों को जो जोड़।।

समझें जहीन खुद को, चेहरे पे भरे रुआब
विज्ञान पढ़ें न संविधान, कर्मकांड करें, जनाब

युवा आभासी दुनिया के, बादशाह बेताज
खड़े हसीन चेहरे के आगे, थामे हुए गुलाब

होते असफल देख, युवाओं में नहीं विवेक
करते आत्महत्या कुछ, या लत लगे शराब

घर परिवार समाज से, सरोकार न उनका
चलाएँ मोबाईल पे नेट, समय करें खराब

झूठ फरेब देख बड़ों के, करते वे भी वैसा
शार्टकट में अच्छे बुरे का रखें नहीं हिसाब

सावन में डीजे सड़कों पे, खूब लगाएं ठूमके
काश मेहनत मजदूरी, बहे पसीने का सैलाब

सत्य अहिंसा तो दूर, रहते हिंसा पे आमादा
संगत उन्हीं की पकड़ी, जो तोड़ें इनके ख्वाब

मनोहर रोजगार नहीं, बिन पूँजी न हो व्यापार
हाल बेहार युवा, वे विश्वगुरु बनने को बेताब।।

भूपसिंह भारती की रचनाएं:-

गौतम बुद्ध (हाइकू)

गौतम बुद्ध
कहे अहिंसा मार्ग
सबसे शुद्ध।

कहता बुद्ध
प्रेम से जग जीत
छोड़ दे युद्ध।

बने स्वभाव
जीव जंतु जीत
छोड़ दे युद्ध।

बने स्वभाव
जी जंतु के प्रति
हो प्रेमभाव।

छोड़ दे छल
क्षमादान करके
बनो सबल।

करुणा दया
अपना ले मानव
मन में हया।

प्यार अमन
विश्व में फैलाने का
करो जतन।

इसी में शान
मानव मानव को
देना सम्मान।

ये भेदभाव
छोड़कर अपना
समता भाव।

ढोंग-पाखण्ड
जागकर करना
है खण्ड-खण्ड।

सत्य अहिंसा
करुणा प्रेम धार
छोड़ दे हिंसा।

करुणशील
बनो अपनाकर
ये पंचशील।

बौद्ध धम्म (गीत)

दुनिया में गौतम बुद्ध का बड़ा शोर सुनाई दे।
बौद्ध धम्म सा धम्म आज ना ओर दिखाई दे।।

संसार में दुख का कारण इच्छा को बतलाया,
शांति पथ पर चलना हमें बुद्ध ने सिखलाया,
बुद्ध सरीका पथ प्रदर्शक ना ओर दिखाई दे।

बाबा साहेब करा गए धम्म का दिग्दर्शन,
बाइस प्रतिज्ञाओं से ही हर्षित होगा जीवन,

बौद्ध धम्म का ज्ञान आज चहुंओर दिखाई दे।

सत्य अहिंसा करुणा बौद्ध धम्म आधार है,
दया शांति समता ममता संग में प्यार है,
इसीलिए बौद्ध धम्म में नवभोर दिखाई दे।

भगवान बुद्ध ने सारनाथ में दिया बुद्ध सन्देश,
अष्टमार्ग बनाए सबको भारत का अभिषेक,
'भारती' को बौद्ध धम्म कालजे की कोर दिखाई दे।

- भूपसिंह 'भारती'

बल्डोदिया भवन,
आदर्श नगर नारलौल, हरियाणा।

राधेश विकास की कविताएँ

कहाँ कमी रह गयी?

सारे समर्पण के बाद
आखिर कहाँ कमी रह गयी
हमने प्रतिपल प्रतिक्षण जिया था
सिर्फ तुम्हीं को,
दिया था वो सबकुछ
जो मिटाकर सारे भेद को
तुम्हें खड़ा कर सके हमारे बराबर
हमारा प्यार क्या
दिन विशेष का मोहताज है?
क्या हमारा प्यार वस्तु विशेष
से ही पवित्र होगा?
क्या हुआ

दो जिस्म एक जान का वादा ?
 तुम्हे दहलीज के
 बाहर निकाल कर दुनिया दिखाने
 के प्रयास में कहाँ कमी रह गयी ?
 जब तुम्हें ज्ञात हो चुका है....
 अब चंदा मामा नहीं है.
 अब चंदा सनम नहीं है.
 अब चाँद पर कोई बुढ़िया सूत नहीं कातती.
 विज्ञान की यात्राएं
 जिस जमीं को रौंद चुकी हों
 अपने कदमों तले.
 जहाँ जीवन की तलाश में
 आग हवा पानी की खोज हो रहीं है
 जो केवल एक ग्रह है.....
 जहाँ विज्ञानव्रती कर रहे नित नये शोध प्रमाणिकता
 के साथ.
 याद रखना
 झूठे मिथक
 कभी प्यार के पोषक नहीं होते.
 कॉमन सेंस,
 आपसी सूझबूझ,
 के साथ प्रतिपल
 जहाँ विश्वास
 पलता है,
 वहाँ जीवन निरंतर पोषित होता है
 वो जीवन को दीर्घायु ही नहीं बनाता
 अपितु आनंददायी भी बनाता है।
 तुम्हे हमेशा केवल
 अपने बराबर ही नहीं लाया
 बल्कि वो मजबूती भी दी कि तुम भी रौंद अपने
 कदमों से चाँद को

और बता सको कि....
 हम अपनी दुनिया को चलनी से नहीं
 आँखों से देखते हैं.
 अब हमारे और हमारी दुनिया के बीच कोई चलनी
 नहीं है।

दीये

दीये राजमहल, झोपडी
 में भेद नहीं करते।
 अंधेरा दूर करने में
 कभी खेद नहीं करते।।
 बस पथ प्रकाशित
 करना ही कर्म होता है।
 दिये ही बताये क्या
 जीवन का मर्म होता है।।
 तम हरने हित हर
 निशि जलते।
 मगर कभी किसी
 से नहीं जलते।।
 जाति धर्म मजहब भाषा
 सब हो जाते बौने।
 मानव बन कर खेलते
 जैसे निशंक मृगछौने।।
 ज्ञान ज्योति से ही
 मिटता हर अंध तम है।
 विकास ज्ञान से ही
 मिटता हर भरम है।।
 तुम्हें क्या लगी है ?
 भूख।
 और तुम्हें... ?

राजनीति।
 बहुत अच्छे,
 जब तुम भूखे देखता हूँ,
 तो भर जाता है
 मेरा पेट,
 और खिल जाती हैं
 मेरी बान्छे
 जो मैं तुम्हें दिखा नहीं सकता।
 जब तुम
 फिर भूख भूख करते हो
 तब मैं घुमाने लगता हूँ....
 अपने बनाए भूल भूलईया में,
 जहाँ भटकते भटकते
 तुम इतना थक जाते हो कि
 तुम्हें बड़े आराम से बैठा देता हूँ.
 बहुत ऊंची दीवार पर
 जहाँ से तुम्हें रोटियाँ तो
 दिखाई देती हैं पर तुम
 भूख भूल नीचे उतार लेने की
 दुहाई करने लगते हो....
 मेरा अस्तित्व
 भूख और रोटी दोनों से है।
 मेरी जिम्मेदारी है दोनों की
 हिफाजत करना.
 क्योंकि जब
 भूख और रोटी दोनों
 गोल गोल घुमाता हूँ
 तो मुझे तन कर खड़े रहने को
 और बल मिलता है....

* * *

वो अपनी और हम
 अपनी पर अड़े रहे।
 बिना हल हुई कई
 मसले यूँही पड़े रहे।।
 ताल ठोकते थे हर
 कदम पर जो,
 चुभते काँटों पर जुबां
 पर ताले जड़े रहे।।
 उन्हें फर्क नहीं गर
 मुसीबत में आटा गीला हो,
 इदार भूख कूडकुड़ाती रही
 उदार वो कड़े रहे।।
 साथ चलने के जो चक्कर
 चले चकरा गए,
 जब तक नहीं चले
 तब तक पकड़े रहे।।
 कभी सोचा ही नहीं
 अपना कौन पराया कौन,
 अपना समझा सबको
 छोटे रहे या बड़े रहे।।
 भले किसी के साथ वो
 नहीं बैठे तो क्या हुआ,
 मगर मुसीबत में हर
 किसी के साथ खड़े रहे।।
 ऊपर ऊपर देख समझता है
 कि इतना ही है तू,
 विकास जितना ऊपर देखत
 उतना ही नीचे गड़े रहे।।
 दिल में हरदम सच
 की मेजबानी रखो।
 बुलंद हौसला और

आँख में पानी रखो ।
 गर लिखना है कुछ
 अलग इबारत दोस्तों,
 जो अपनों को जोड़े
 रखे वो कहानी रखो ।।
 हौसला रख तुझे तोड़ने
 वाले टूट जायेंगे ।
 ये बरसाती बुलबुले हैं
 सब फूट जायेंगे ।
 जबजुट होकर चलेगा,
 देख लेना अच्छे अच्छों
 के छक्के छूट जायेंगे ।।
 पढ़ों पुरखों को खांधलो
 अपना इतिहास ।
 पढ़ो वसीयत अपनी
 जगावो अपना विश्वास
 पुरखों न करना कभी,
 आओ अपनी पर काट
 दो युग युग की फांस ।।
 अपी तर्कश में हमेशा
 जिन्दा वो तीर रखो ।
 जमीर जिन्दा रखा
 जिन्दा जागीर रखो ।
 जिनकी बदौलत हर
 शान जिन्दा है,
 उस शिक्षा, संघर्ष,
 स्वाभिमान की नजीर रखो ।।
 अंदाज अलहदा रख ।
 सोच उम्दा रख ।।
 वो लीक पर चले तो चले,
 तू अपना कदम जुदा रख ।।

पुनेश समदर्शी की कविता

जाति-धर्म का पतन हो जाए,
 काश ऐसा कोई जतन हो जाए,
 जाति-धर्म का पतन हो जाए ।
 फिर ना रहे आपस में भेदभाव,
 सारे जहाँ का एक वतन हो जाए ।
 सभी में हो अपनेपन का भाव,
 अपना-पराया सब खतम हो जाए ।
 सबक यही है जिंदगी का बन्दे,
 सबका भला तेरा करम हो जाए ।
 ये दौलत, बंगला, गाड़ी सब मेरे हैं,
 तुझको न ये झूठा भरम हो जाए ।
 नंगा आया था, नंगा ही जाएगा,
 मानवता ही तेरा धरम हो जाए ।
 काश ऐसा कोई जतन हो जाए,
 जाति-धर्म का पतन हो जाए ।

पुनेश समदर्शी

मारहरा (एटा, उत्तर प्रदेश)

(कवि, लेखक व सामाजिक चिंतक)



GOAL के तत्वाधान में ऑनलाइन राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का आयोजन

‘ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराज्जु लिटरेटिअर्स (GOAL) के तत्वाधान में दिनांक : 18 सितम्बर 2022 को दोपहर 2:00 बजे से सायं 7:00 बजे तक, ऑनलाइन राष्ट्रस्तरीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि-सम्मेलन में जिन कवियों ने प्रतिभाग किया, उनके नाम हैं- रघुवीर सिंह ‘नाहर’ (राजस्थान), बुद्धप्रिय सुरेश उजाला, लखनऊ, पुष्पा विवेक (नई दिल्ली), समय सिंह जौल (नई दिल्ली), इं. रूपसिंह रूप (आगरा), राकेश प्रियदर्शी (बिहार), अखिलेश कुमार, भागलपुर (बिहार), एस.एन. प्रसाद (लखनऊ) डॉ. वेद प्रकाश वेदी (अयोध्या), उत्तीर्णा धर (पश्चिम बंगाल), एल.सी. जैदिया ‘जैदि’ बीकानेर (राजस्थान)। सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. राम मनोहर राव जी (अध्यक्ष, (GOAL) ने किया। संचालन राधेश विकास जी (सदस्य, GOAL) और देवचंद्र भारती ‘प्रखर’ जी (सचिव GOAL) के द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मनोहर लाल प्रेमी जी (उपाध्यक्ष, GOAL) ने किया।

राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन के निर्णायक मंडल में श्रद्धेय दामोदर मोरे जी (महाराष्ट्र), श्रद्धेय श्यामलाल राही ‘प्रियदर्शी’ जी (उत्तर प्रदेश), श्रद्धेया नविला सत्यादास जी (पंजाब) और श्रद्धेय कर्मशील भारती जी (नई दिल्ली) जी आदि विद्वान विचारक थे।

सम्मेलन में उत्कृष्ट कविता/दोहे गजल प्रस्तुत करने वाले कवियों व कवयित्रियों की सूची निर्णायक-मंडल द्वारा एक सप्ताह के अंदर ही उपलब्ध करा दी गयी। फलस्वरूप सभी पुरस्कृत रचनाकारों को ‘श्रेष्ठ काव्यकृति सम्मान’ का प्रमाण-पत्र सहर्ष प्रेषित किया गया। यह सम्मान प्राप्त करने वाले कवि थे- ‘दोहे’ के लिए रघुवीर सिंह ‘नाहर’ (नारनौल, हरियाणा), ‘अब झेलो’ कविता के लिए डॉ. सुरेश उजाला (लखनऊ, उत्तर प्रदेश), ‘औरत कमजोर नहीं कविता के लिए पुष्पा विवेक (नई दिल्ली), ‘पर प्रतिरोध जरूरी हो’ कविता लिए रूप सिंह (आगरा, उत्तर प्रदेश), ‘गजलों के लिए डॉ. एल.सी. जैदिया ‘जैदि’ (बीकानेर, राजस्थान), ‘पीपल’ कविता के लिए डॉ. वेद प्रकाश वेदी (अयोध्या, उत्तर प्रदेश), ‘इतिहास’ कविता के लिए राकेश प्रियदर्शी (पटना, बिहार), ‘हिंदी भाषा’ कविता के लिए उत्तीर्णा धर (मालदा, पश्चिम बंगाल)।





(GOAL) द्वारा 'धम्म प्रहरी सम्मान' वितरण का आयोजन

'ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेचर' (GOAL) के तत्वावधान में धम्म दीक्षादिवस (14 अक्टूबर 2022) के उपलक्ष्य में 'धम्म प्रहरी सम्मान' वितरण का आयोजन किया गया है। इस सम्मान हेतु कोई भी रचनाकार प्रतिभाग कर सकता था, चाहे वह किसी भी लेखक संघ का सदस्य हो, GOAL का भी। इच्छुक प्रतिभागियों ने अपनी दो-दो काव्य रचनाओं की वीडियो रिकार्डिंग भेजा, जिसमें अपने नाम और अपने नाम और अपने शहर का नाम बोलकर रचना को रिकॉर्ड किया था। साथ ही, उन्होंने लिखित रूप में भी रचनाओं को भेजा था। काव्य रचनाएँ अप्रकाशित एंरां नवीन माँगी गयी थीं। केवल धम्म विषयक रचनाएँ ही स्वीकार की गयीं। यथा -बौद्ध दर्शन, डॉ० आंबेडकर का धम्म संबंधी चिंतन और आंदोलन, वर्तमान में धम्म का स्वरूप, गृहस्थ और भिक्षु का कर्तव्य, धम्म की प्रासंगिकता, धम्म जीवन शैली, बौद्ध विहारों की उपयोगिता, धम्म संस्कार, शिक्षा, चक्र पवर्तन का प्रसंग, डॉ० आंबेडकर की धम्मदीक्षा आदि। निर्णायक-मंडल में श्रद्धेय एल.एन. सुधाकर जी (नई दिल्ली), श्रद्धेय बुद्ध शरण हंस जी (बिहार), श्रद्धेय डॉ. जयश्री जी (महाराष्ट्र), श्रद्धेय डॉ. मुकुंद रविदास जी (झारखंड) और श्रद्धेय भंते आलोक

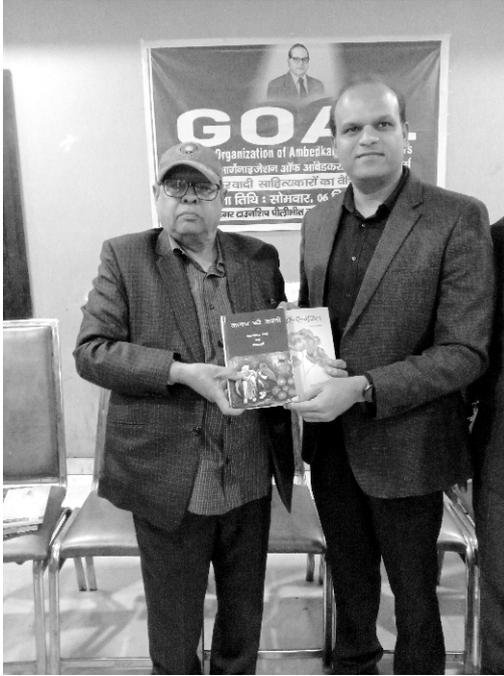
बौद्ध जी (उत्तर प्रदेश) आदि विशेषज्ञ शामिल थे।

निर्णायक-मंडल द्वारा चयनित धम्मसंगत उच्च स्तरीय रचनाओं को पुरस्कृत किया गया तथा रचनाकार को "धम्म प्रहरी सम्मान" प्रदान किया गया। परिणाम की घोषणा और सम्मान वितरण (डिजिटल) दिनांक 14 अक्टूबर 2022 दिन-शुक्रवार को किया गया। 'धम्म प्रहरी सम्मान' हेतु चयनित रचनाकारों के नाम हैं- रूप सिंह रूप, डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय, मनोहर लाल प्रेमी, भूपसिंह भारती, राधेश विकास, सुरेश कुमार राजा और नीरज कुमार नेचुरल।



GOAL का स्थापना दिवस मनाया गया

06 दिसम्बर, GOAL का स्थापना दिवस है। इसी दिन 06 दिसंबर 2021 GOAL (आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन) की स्थापना राजरानी होटल, महानगर टाउनशिप, बरेली में की गयी थी। GOALकी वर्षगाँठ के अवसर पर 06 दिसंबर 2022 को GOAL के संरक्षक माननीय श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' जी की ओर से दोपहर के समय लघु दावत की व्यवस्था राजरानी होटल में की गयी। इस अवसर पर राही जी के नवीनतम ग़ज़ल-



संग्रह “तमाशा-ए-ज़िन्दगी” का विमोचन माननीय डॉ. मनु प्रताप जी (एसोसिएट प्रोफेसर - हिंदी विभाग, बरेली कॉलेज बरेली) और माननीय डॉ. विनय ऋषिवाल जी (प्रोफेसर - कंप्यूटर साइंस बी.टेक., रुहेलखंड यूनिवर्सिटी कैंपस) के द्वारा किया गया। राही जी ने अपनी दो अन्य पुस्तकें भी (ग़ज़ल-संग्रह “बहार-ए-ग़ज़ल” और उपन्यास ‘कागज की कश्ती’) उक्त प्राध्यापक-द्वय को भेंट की।

उक्त प्राध्यापक-द्वय को GOAL के अध्यक्ष माननीय डॉ. राम मनोहर राव जी ने अपनी पुस्तकें “आंबेडकरवादी चेतना की ग़ज़लें”, “तीसरी आजादी की जंग” और ‘आखिर कब तक?’ उपहार स्वरूप भेंट की। इस अवसर पर GOAL के महासचिव देवचंद्र भारती ‘प्रखर’ सहित रामभजन लाल जी, घमंडी सिंह जी, सुरेश आर्य जी, सुरेश आर्य जी, इतेश कुमार जी आदि बुद्धिजीवी लोग उपस्थित रहे।

GOAL के प्रथम अधिवेशन का सफल आयोजन

दिनांक : 27 नवंबर 2022, दिन : रविवार को हिंदी भवन, नई दिल्ली में 'ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेचर्स' GOAL (आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन) के तत्वावधान में संगठन के स्थापना दिवस 6 दिसम्बर के उपलक्ष्य में आयोजित वार्षिक समारोह (प्रथम अधिवेशन) सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन कर रहे GOAL के महासचिव देवचंद्र भारती 'प्रखर' ने बताया कि GOAL का उद्देश्य साहित्यिक आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और शैक्षिक जागरूकता भी है। 'इक्कीसवीं सदी हिंदी साहित्य और साहित्यिक आंदोलन' विषय को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य में कोई मुख्यधारा अथवा गौण धारा नहीं है। आंबेडकरवादी साहित्य, हिंदी साहित्य से अलग नहीं है। आंबेडकरवादी साहित्यकार भी हिंदी साहित्यकार हैं। हिंदी साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना से युक्त जो साहित्य सृजन करता है, वह आंबेडकरवादी साहित्यकार कहलाता है। किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह हिंदी साहित्यकार की श्रेणी में नहीं आता है।

GOAL के उपाध्यक्ष श्रद्धेय मनोहर लाल प्रेमी जी तथा GOAL के सदस्य श्रद्धेय राधेश प्रताप 'विकास' जी और श्रद्धेय सुरेश कुमार 'राजा' जी को "धम्म प्रहरी सम्मान" प्रदान किया गया।

डॉ. राम मनोहर राव जी की नवीनतम प्रकाशित काव्य-संग्रह की पुस्तक 'आखिर कब तक?' का विमोचन मुख्य अतिथि के द्वारा किया गया। डॉ. राव जी ने अपने काव्य-संग्रह में समसामयिक सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए लैंगिक विषमता, सामाजिक भेदभाव, धर्म सापेक्ष राजनीति आदि को ध्यान में रखकर यह प्रश्न किया है कि आखिर कब तक ऐसा होता रहेगा? इस अवसर पर वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं GOAL के संरक्षक मा. श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' जी की नवीनतम प्रकाशित पुस्तक 'शाख-ओ-गुल'(गज़ल संग्रह) सहित पाँच पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली की प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. हेमलता महिेश्वर जी ने कहा कि बच्चों को संस्कारित करने हेतु बाल साहित्य का सृजन करने की अत्यंत आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सेवानिवृत्त प्रधान आयुक्त आयकर डॉ. रमेश कुमार जी ने भी आंबेडकरवादी बाल साहित्य की आवश्यकता का समर्थन किया। वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार मा. कर्मशील भारती जी ने यह स्वीकार किया कि वर्तमान में आंबेडकरवादी साहित्य आंबेडकरी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा आंदोलन को सही दिशा प्रदान कर रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे GOAL के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. राम मनोहर राव जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कुछ लोगों को यह भ्रम है कि GOAL में महिलाओं का सम्मान नहीं किया जाता है। जबकि सच यह है कि GOAL अतिवादी महिलाओं को महत्व नहीं प्रदान करता है। किंतु GOAL के कार्यक्रम में कोई भी महिला उपस्थित हो

सकती है। उपस्थिति से संबंधित कोई बाध्यता नहीं है। ध्यान देने की बात यह है कि GOAL केवल समतावादी महिलाओं को ही सम्मानित करता है। इस वक्तव्य के साथ डॉ. राव जी ने कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

GOAL के इस प्रथम अधिवेशन में उपन्यास सम्राट एवं महान ग़ज़लकार श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' जी, GOAL के वर्तमान उपाध्यक्ष मनोहर लाल प्रेमी जी, राधेश प्रताप 'विकास' जी, राजाराम वर्मा जी, नेतराम ठगोला जी, पुष्पा विवेक जी, अल्पना सरोज जी, बौद्धाचार्य डॉ. चिरंजीलील जी, बयान टीवी के संस्थापक डॉ. रूपचंद गौतम जी, जितेंद्र सिंह गौतम जी, इतेश जी, लता साहित्य सदन गाजियाबाद के प्रकाशक आशीष सिंह जी आदि लोग उपस्थित रहे।





‘आंबेडकरवादी साहित्य’ पत्रिका के मंडल प्रतिनिधिगण

रुपचंद गौतम, दिल्ली, 9868414275

कर्मशील भारती, दिल्ली, 9968297866

विजय छाण, राजस्थान, 9983272626

प्रह्लाद मीणा, राजस्थान, 9982553620

विनोद कुमार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 8765275887

प्रबुद्धनारायण बौद्ध, चन्दौली, उ.प्र., 9005441713

विजय कुमार, चन्दौली, उ.प्र., 9198371768

सूर्यमल बौद्ध, गाजीपुर, उ.प्र., 9919047757

नीरज कुमार नेचुरल, जौनपुर, उ.प्र., 8318543949

मुन्ना कुमार, जौनपुर, उ.प्र., 7075751143

विरेन्द्र सिंह दिवाकर, हरदोई उ.प्र., 8765076843

अमित कुमार बौद्ध, रामपुर, उ.प्र., 7983836622

लोकेश आजाद, इटावा, उ.प्र., 8847398166

पप्पूराम सहाय, झॉसी, उ.प्र., 6393572259

आगामी अंक

जनवरी-जून 2023

(एल.एन. सुधाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

उक्त विषय से सम्बन्धित आलेख, पुस्तक समीक्षा, संस्मरण
आदि आमंत्रित हैं।

‘आंबेडकरवादी साहित्य’

पत्रिका की सदस्यता हेतु विवरण

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : 350/-

द्विवार्षिक : 650/-

त्रैवार्षिक : 1000/-

आजीवन : 7000/-

भुगतान विकल्प :

Bank Account Number : 35332395763

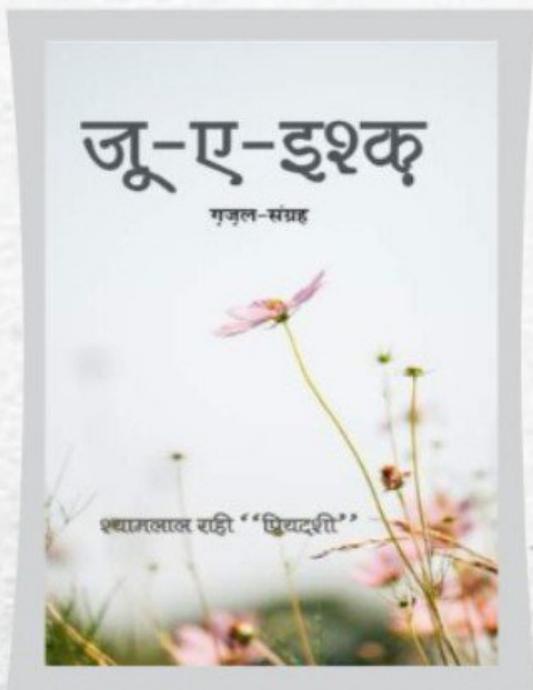
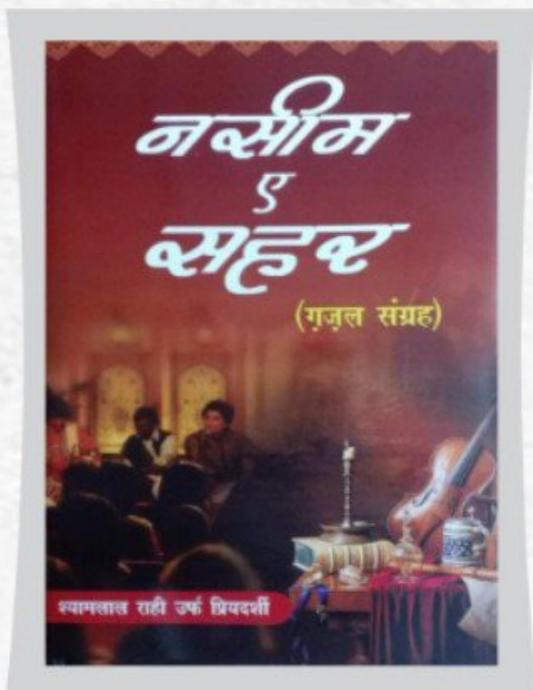
Account Holder : Devachandra Bharati

Bank Name : STATE BANK OF INDIA

IFSC Code : SBIN0012302

  PhonePe  G Pay : 9454199538

वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं सुप्रसिद्ध ग़ज़लगो माननीय श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' के कुल 22 ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। नवीन प्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह की पुरतकें निम्न हैं।



खुद को ग़ज़ल का विशेषज्ञ समझने वाले कुछ लोग प्रायः आंबेडकरवादी साहित्यकारों की ग़ज़लों को बहर से रहित कहकर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आलोचना करते हैं। ऐसे तथाकथिक ग़ज़ल के विशेषज्ञों को आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं समालोचक देवचंद्र भारती 'प्रखर' की ग़ज़लें अवश्य पढ़नी चाहिए। 'प्रखर' जी का शीघ्र ही प्रकाश्य ग़ज़ल-संग्रह है-

'लज़ज़त-ए-अलम'

(दूसरा संस्करण) अर्थात् दुखों का आनन्द।

इस ग़ज़ल-संग्रह में आंबेडकरवादी चेतना से परिपूर्ण एवं ग़ज़ल के सभी प्रतिमानों पर आधारित रचित ग़ज़लें संग्रहीत हैं। पुस्तक का मुखपृष्ठ अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

